तीतर चाकर



रचणिया : चन्द्र शेखर बेवश, ढालपुर, कुल्लू (हि० प्र०)



Tharah Kardu

एक व्यथा – एक संतोष

कुल्लूई भाषा-उस भाषा या बोली, आप इसे जो भी समझना और बोलना चाहें, हिमाचली पहाड़ी को एक अंग एक रूप है जिस में लिखी और छापी यह कविमय पहिली पुस्तिका कह सकता हूं और जिसे लिखने छापने का प्रयास किया है हमारे हिमाचल के कुल्लूई रुप के एक गिने माने व्यक्ति और भाषा विद आदरणीय पुरोहित चन्द्र शेखर जी ने। काश्मीर से लेकर असम दार्जिलिंग तक हिमाचल के इस भू–भाग को पहाड़ी भाषी माना और कहा जाता है जिस में अपने-२ प्रदेशानुसार अनेक रूपों में बोला जाता है कि लिपी प्राय राष्ट्र भाषा हिन्दी ही है. यह सिलसिला ना मालूम कितने युगों से ऐसे चल रहा है परन्तु पहाड़ों के भाग्य में आम तौर पर अपने पराए सभी के दिलों में एक हीन भावना बनी रही होगी जिस के फल स्वरूप इन बोलियों उप-भाषाओं को निज गौरव प्रगट करने का अवसर नहीं मिला और यहाँ के निवासियों ने भी राजनैतिक सामाजिक, साँस्कृतिक एवं आर्थिक पराधीनता के कारण इस ओर ध्यान देने योग्य नहीं बनने दिया. हम लोग आम तोर पर अपनी मातृभाषा या बोली में दूसरों के समक्ष बात करने से लजाते रहे चाहे उनमें जीवन के प्रति हर प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए इनमें शब्द भण्डार आवश्यकता से कितने ही अधिक क्यों न रहे हों। कितना दुर्भाग्य रहा है कि नाभी में कस्तूरी होते हुए भी मृग वन-२ ढूंडता फिरता रहा। यही एक कामना थी जो मेरे मन में तब से कांटा बन कर खटक रही थी जब आज से संभवत चालीस वर्ष पूर्व कुछ पहाड़ी मित्र लाहौर कालजों में पढ़ा करते थे। यह कामना धीमी-२ कसक बनी दिलों में चुटकियां लेती रही साल हा साल और तब एक समय आया जब भारत मां के पाँव की पराधीनता की बेड़ियां कटी-एक प्रकाश अपने संग सैंकड़ों हजारों आशाओं की किरणे समेट चहूं दिशाओं में फैंकना आरम्भ हुआ........उन में एक किरण इस आशय की भी कि अब हमें अपनी भाषा और सस्कृति को न केवल प्रकाश उस प्रकाश तक पहुंचने में सहायता मिलेगी वरन हम समस्त पहाड़ी जनता को सभी प्रकार की अवनती से छुटकारा मिलेगा और हमें स्वाभिमान की इन मृदुल, सरस, शान्तिप्रद किरणों के प्रकाश में अपने जीवन को उभारने, निखारने और प्रखरित करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। और सचमुच ऐसा हुआ भी । काशमीरी, डोगरी, पहाड़ी, किश्तवाड़ी, हिमाचली पहाड़ी और उस के

अनेक आँचलिक रूप, गुजराती, नेपाली, गढ़वाली, भोटी आदि बोली भाषाओं में जीवन की एक मधुर लहर जागृत होने लगी। भाषा विभाग बने, आकादमियों ने जन्म लेने आरम्भ किये और प्रकाश की हर नवीन किरण ने पहाड़ों के साँस्कृतिक जीवन में एक नया उल्लास अनोखी तड़प और धड़कन गूंजने लगी। साहित्यकार, लेखक, कविगण संगीतज्ञ, नर्तक आदि सब की रंगे भड़क उठी और समय के साज पर थिरकने लगे पांव और उंगलियों में विह्वल हो उठी लेखिनियाँ। कवि की उड़ानें और कलाकार की सुरताल में संजोई ताँने स्वत: शतश: कल्पनाओं को जनम देने लगी। पहाड़ी जन समाज को शायद पहिली बार यह एहसास होने लगा कि हमारी भाषा, कला और सांस्कृति में वह सभी कुछ है जो एक सभ्य समाज के पूवजों और पुरखों को अनमोल भाती कही जा सकती है। और जिसे हम अनभिज्ञता और विवशता के कारण भुला बैठे थे।

चालीस वर्ष पहिले की वह व्यथा शनै-२ हर्षोल्लास में बदलने लगी। पुस्तकें प्रकाश में आई, लेख लिखे गए, कविताएं हृदय के मन सरोवर से धाराएं बन कर बहने लगी जिसमें से एक धारा हैं यह पुरोहित चन्द्र शेखर जी की पुस्तिका "तीतर चाकर" जिसे वे आप को भेंट करने चले हैं। कुलुई बोली में भी बहुत कुछ लिखा गया है कालेज के होनहार विद्यार्थीओं में भी अपनी बोली के लिए सुन्दर और अदभुत भावनाएं जागृत हो उठी और कालिज मैंगजीन उन की सुन्दर कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने लगे। परन्तु पुरोहित जी की बेबसी ने इस पुस्तिका के माध्यम से यह साबित कर दिया कि वे असल में किसी प्रकार भी "बेबस" नहीं है हां इतना अवश्य है कि उन के अंतराल में कुलूई शब्द भण्डार और उनको हर प्रकार के छन्दों में ढालकर हिमाचली व कुलूई समाज के समक्ष लाने में प्रत्यक्ष रूप में बेबस रहे वरना उन के बस में तो कविताओं, टप्पों, गीतों आदि का एक अथाह समुद्र है जिस की लहरें साहिल से टकराती रहीं और वापिस निराश जातीं रही। यह उन्हे इस बेबसी को तोड़ने का पहिला मौका मिला है। मुझे मालूम है अभी उन के पास लेखों, नाटकों एकांकियों की भी कमी नहीं है जो लिखे पड़े हैं परन्तु जिन्हे प्रकाशित करने की उन की बेबसी बनी हुई है।

प्रस्तुत कार्य कैसे सम्पन्न हो सका यह उन्होंने स्वयं अपने पुस्तिका आरम्भ में दिया गया हैं जिसे दुहराने की आवश्यकता नहीं और हमारा कर्तव्य अब हमें पुकार रहा है कि हम पुरोहित जी को भविष्य में बेबस न रहने दें - यही नहीं दूसरे

साहित्यकार मित्रों और प्रियजनों को भी प्रोतसाहित करने के लिए कटिवद्ध हो जाए और यह हो सकता है अपनी बोली भाषा के प्रति सम्मान और गौरव की भावना हर एक कुल्लू निवासी भाई बहिनों के दिलों में उत्पन्न करने से।

कुछ और सज्जनों ने भी प्रयास किये हैं परन्तु जो बात मैं कहे बिना कदापि नहीं रह सकता वह कुल्लूई कविताओं को अनेक छन्दों में सभी रसों,में एवं भावाभिव्यक्ति में सुन्दर, अनूठे और रहस्म मय सार्थक शब्दों के चयन में जिन्हें यदि ठीक लय और शास्त्रोक्त छन्दो के अनुरुप पढ़ा जाए तो बस आनन्द ही आ जाता है। साहित्य में छन्द लय और सार्थक शब्दों के चयन की उत्कृष्ट कला में प्रवीण शायद ये दूसरे व्यक्ति हैं। कांगड़े में पं० दुर्गा दत्त शास्त्री इन से पहिले एक संस्कृत नाटक को उन्हीं छन्दों में बांध कर प्रस्तुत कर बैठे हैं।

बेबस के बस में अभी बहुत कुछ है। इन के इस कार्य को ऐसी कुशलता से प्रकाश में लाने के लिए वे बधाई के पात्र तो है ही, हम चाहते हैं उन का जितना लिखित साहित्य बाणी है उसे प्रकाश में लाने के लिए आप स्वयं तथा साहित्य कला संगम कल्लू को सहयोग और सहायता प्रदान करें— यह मां सरस्वती की आराधना से कम नहीं होगा। "साहित्य कला संगम" कुल्लूई संस्कृति, भाषा एवं कला को राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर आगे लाने का दृढ़ संकल्प कर बैठा है और उसमें अग्रसर है इस आपके वरद हहस्त और आप की शुभकामनाओं की आवश्यकता है सफलता के लिए।

जहां पुरोहित जी का कार्य स्तुत्य है वहां हमें एक खेद अत्यन्त अखर रहा है कि प्रकाशन में शब्दों का रग रुप सफलता की कसौटी पर पूरा नहीं उतर पाया, प्रूफ देखने मे भी कमी महसूस होती है - पाठक इन्हें क्षमा करें - कुल्लू मे यह पहिला प्रयस जो हुआ।

चालीस वर्ष पूर्व की वह व्यथा - और अब थोड़ा संतोष -यही इस पुस्तिका के प्रकाशन की कहानी हैं।

बिनीत : लाल चन्द प्रार्थी

नोट : मेरे इस प्रस्तावना को हिन्दी भाषा में लिखने का कारण है। कुल्लूई में असल प्रस्तावना तो श्री 'बेबस' ने स्वयं लिख दी है जो कुल्लूई भाषा बोली को भली प्रकार जानने मे समर्थ हैं और उस से अधिक लिखना आवश्यक भी नहीं। मेरा यह साहस है उन पाठकों के प्रति जो कुल्लू मे जन्मे ना भी सही तो जो अपने आप को कुल्लू का मानते है, जिन्हें कुल्लू से प्यार है जो कुल्लू के हैं और बने रहना चाहते हैं परन्तु अभी इस बोली भाषा से थोड़े अनभिज्ञ हैं। उन्हें इस प्रकाशन का महत्व, इस के रास्ते की कठिनाईयां और हमारे भविष्य के कार्यक्रम का पता लगना चाहिए ताकि वे भी इस वांच्छित कार्य में हमारा हाथ बटाने के लिए साहस और उत्सुकता के लिए साहस और उत्सुकता से आगे आएं।

प्रार्थी

दूई बोल तोतर—चाकर

ऐ नाँ सा एई पोथूरा, शुण तुसरै होथा न सा, कीबै जे एता न थोड़े जोहे गीता न टप्पी सी आपू गौंठिऐ भोरैंदे, आसरैं कूल्लु तसीलो री बोली न कथा पढ़ाऊणी, परख्यान लामणा, बाम्हणू, भौंऊरु सौंघे नाटी री मीठी भाखा ता डूघी भावना आली गीता ता छूढी थी, पर एसा बोली न लिखणे छापणे रा जतन नी हुआ, एसी गलो म्हारी बोली रै बोल लिखणे, सुंघणे, बाचणे ता फियाड़ने रा लोका रो वश नी आथी, एतौरा कारण ऐबी थी जो ओखली लोक बुहारान पोहलो टांकरी है चौला थी, सो बड़ी धाउड़ी लखाई सा, फीरी उर्दू आई, तेसान बी तीना सीभी बोल ढौंकणे ता चुएडने री समरथ नई थी आथी हिन्दी रै देव नागरी आखर ता सी सोभी गला लिखणे रो ठीक पर तेतो री बी खरी जाणकारी लोड़ी तबो बी भियासा बाझी चूंघींदे वाचींद नी आथी एको पाली बाचदेआ मूंडा न दाह चैकिया सा पर जीऊ जीऊ आगै पोढ़दें जाणा तेतरा है बोहू फियाड़िया बी सा ता मजा बी एजा सा ।

सीभी न पोहलो ईसाई धर्मा आलो आपणा प्रचार पोथू कुल्लू री बोली ता हिन्दी आखरा न छपाऊ थी, सौ आसो बड लोभा चाउ सौंघे पोढ़ू थी । १९१७ री बोरशा न सोहरं रै मिडल स्कूला आलो ता १९४१—४२ जगसुखा आलं आपणी बोली न नाटक केरै थी, ते बी लोका रो बडं गौमो थी । अंढै है गीता टप्पी रा एक पोथू गश ल ग्रांएं रै ठाकर नीमत रामे आपू गौंठिए आपू छपाउ थी सौ बी देश सुधार ता समाज सुधारा पांधी बड़ा शोभला थी पर किचकी तंढा है गोभुआ ।

मैं बा पता नी सन् १९५२ रै वोटं रै मौकें किछ टप्पें गौंठिए छप ऐ थी तिनरा बड़ा शोभला परभाओ हुआ । तीना वाचोए राजा रघुवीर सिंघो ता होरी खरें खरैं लोकै मूंबो नाम बी धोने थी । तदी न पोर पं० लाल चन्द प्रार्थी होरैं मास्टर नेसूर म होरैं ता मैं बी लीखो ता केरू छूढा पर आगैं पंजाब सरकारैं सो लेखो नी पाऊ हां आपणे तौउरै कई नाटक कथा ता गीत टप्पी लिखें केरू नाटक ता आहुंजी केल्है नी सौहरा बजारा स्कूला ता कला केन्द्रा न सरीखे है । ते सारे देश दुहारा —समाज सभारा ता सरकारो परचारै री लैयें लिखे थी ।

कूलू री बोली रा नमूना मैं कूलू सौहरै रै भूमिऐ लोकै री है बोली पांधै डाहू कीबो जो व्यास, पार्वती, गड़सा, सरवरी बजौरा घाटी सौहरा म है जीडिया सी ईना घाटी जो ढूणने रैं आंगी-आंगी लहजे सी तीना सीभी रा मौंभ सौहर है सा । सौहरै री बोली सा ता गडमड जरूर पर मैं खालस है काइम डाहणे रा जतन केरूदा सा ।

आसरी बोली एक ता सा बी होछे जेहै लाकं री, सौ बी सा केल्ही जेही, मंडी न क्याऊं बलास पुरा- कांगड़ै फेटैं री लूड़ी न ऐ नी जुड़दी, एसौ गलै एसरा नाता साता भेत पछियाणा होरी बोली सेंघ नी हुऐ, रटाँगा पोरैं ता भला भोटी है बोली पौई, एसौ गलै सिभ गुणा होंदेआ बीएसरी कदर कीमत नी पोई।

जबै आसौ हिमाचल प्रदेशा न मिली होर म्हारैं सिम्बर प्रार्थी होरा बणे तीनें सारै हिमाचलो रें डौगा डूंखरा न गोभुऐ दे ओसली कला ता साहित्य र खजाने तोपी कोतिऐ प्रगट केरने री तैयें एक भाषा बिभाग बणाऊ, भाग तेई महकमे री जिम्मेवारी बी तिना बी हैमिली, तेई भाषा बिभाग सारैं हिमाचलो री १३-१४ बोली रें जाणकारा ता लखारी बी शुभाह ता बाल बोना, तीनें सीभीए आपणी २ बोली रें कथा-गीता पख्यान-स्वांग पहाउणी आदि पराणी चीजा तोपी गेशीऐ प्रगटें केरे सैंदै आपणी २ बोली न आपणे २ लावी रें कभाज रस्मा मुजब होर बी बोहू किछ लिखू, ईना छापणे रीतोयें बिभागे "हिम भारती" नाए री पत्रका सीभी पहाड़ी बोली छापणे बे ता म्हारैं पहाड़े री कला संस्कृति-साहित्या बी हिन्दी न छापणे री तैये सोमसी नाए पत्रका चलाई, ते हाजी बी जारी सी सी, एसा है सैंघी ईना सारी कला रैं सग्रह आभी २ छापीऐ बाहू सारी पोथी छापी डाही दी।

कुल्लू री केल्ही बोली बैं बढ़ावा देणे री तैयें "प्रार्थी होरैं कुल्लू साहित्य कला संगम" काइम केरू, तेई रा दफतर सौहरा शाहान रमणीक होटलना कोछे सा। पर किछ अंढा बूझिया साजी म्हारैं लोक फंसने रैं ब्याने न उडिऐ चटक-मटका आली पत्रका उपन्यास कहाणी पौढ़ीऐ है मन भलाणा चाहा सी। आपणे लाकी ता बोली रा चम-त्कार दर्शाणे न किछ लोजिया सी।

ऐ लोजीणे आली गल किछ अंढी हुई साजी आसरी कुलुई बोली है लागी सा बोगड़ी दी, एसरा रूप ता मान मूल लागा घटदा, लोका देशी गला न बी ओढा सुच उर्दू-पंजाबी ता अंग्रेजी रा दाब पायं बोली रा नाश लागै केरदैं नुहार लागी बगाड़दे, ऐ कोई शोभली गल नी आखी हिन्दी रा मान कुण नी केरदा ? पर एसा कुलुई रा मान कुणी केरना ?

जबौ आसौ आपणी बोली धीरैं भालु तबौ पता लागा जौ म्हारी बोली ता बड़ी शाहूकार सा आसौ तुलसी रामायणा ता संस्कृती री कई पोथी रै टुकरै रैं चुएछे आपणी बोली न

केर ता बोल शब्दै री को तंगी नी बुझुई थोड़ नमूने एई पोथू न बी सीं इना असल पोथी सौंघो मलाले ता पता लागणा जे आसै कोई चीज छौडी की बगाड़ी नी आथी। तढा है आपणी बोली न सीभलीखी सका सी सीधा आपणी बोली री रांभड़ी जानकारी ता हिन्दी आखरे री शोभली पछियाण लोड़ो तबै आसरें कूलू री केतर केही गला लिखणे बै छूढै लखारी निकली सका सी।

एई पोथू रैं गीता टप्प किछता नाटी रैं ताल भाखा न गाणे रैं ता किछ सी शास्तरी छंद, ऐ होआ सी बाभी गाऐ शणाणे री कविता ए गौंठणे ता होआ सी करड़ै जरुर पर जबै ईना बाचणे रा ढंग सई आऊ ता मजा बी बड़ा एजा सा कीबैं जे ए कवित छंद बिलकुल शास्तरा मताबक सी बणाऐ दै जेतर आखर एकी पाली न होआ सी तेतरैं है पाछै तैयें सीभी पाली न होआ सी।

शास्तरी छंदा न मैं बोहू जेही गीता एसी गलै लीखी जे उईं न सी अकली बुढ़ो री गला ता ज्ञाने री आसरैं देशान गाण गा सी शौंकी री नाटी नोचणे री तैयें, तेता बै लोड़ी होआ सी चटपटी ता चुड़ चूड़दी गीता, दूजा हाऊं गायै शणाई नी सकदा तबै मैं एई पोथू रा नां "तीतर-चाकर" डाहू ताँढो तर्ज सा इना छंदै री। लोमी-२ पाली आले छंद एई कारणी पाऐ जैं तीना न बोहू मतलब औपड़ा सा।

ईना छापणे बैं किछ हिमाचल सरकारैं (भाषा संस्कृत विभाग) ता कूलू री साहित्या कला संगमे मू बैं शुआह ता भजत भीने, एसी गलै मैं मूल बी थोड़ा डाहू। दूजा मैं ऐ वपार गजारें बै नी छापी, हाँऊ चाहा सा बोहू लोक पौढ़ा न ता आपणी बोली न आपणी ता होरतैं री गला बी लिखीऐ प्रगटी केरा न। ता आपणे तीतरा-चाकरा बै भूरा न। ऐ भेट मेरी कूलू रैं लोका बै सा।

तूसरा आपणा माणू चन्द्र शेखर बेबश, ढालपुर, कुल्लू (हि० प्रदेश)

मूल्य :— 3-50

कुण कौखै

कुल्लू के महाराज श्री रघुनाथ जी की

प्रार्थना १

जय परमेसर सिरी रगनाजी,
सारी बिंदरा लोड़ी राजी। जय परमे०

तेरा उच्छव विजय दशमी ।
जुग जुग डाही एसा रसमी ॥
सदा जिउं जिउं फेरी एसा ताजी ।। जय०

जै जै ठारा करड़ू देऊ ।
रूड़ रोग दुख लोड़ी नेऊ ॥
मुलखै लोड़ी जीती बाजी ।। जय परमे०

तू सा म्हारा मालक ठाकर।
आसै तेरै तीतर चाकर ॥
बेवश कोलै दूहै सराजी ।। जय परमे०

धन महाराजा तेरी झांकी ।
कमल संघासन शोभा बांकी ॥
सीता याजी हनुमत गाजी ।
जय परमेसर सिरी रगनाजी ॥

गो स्वामी तुलसी दास रचित राम गीतावली की अन्तिम कविता कुलुई अनुवाद

कवित्त छंद ३१ वर्ण–२

रघुनाथ तुसारै चलितर सी कंढै बांकै गांदै सदा रौहंदै अजुधयारै बासी सी,
खुद परमेसरै ऐ माण्हू रा तुआर धारू बड मना आलै तूसै ब्रह्म अविनासी सी ।
जग थी बचाऐ तूसै ताड़का सुबाहु मारै खुशी हुऐ ऋषि जुण तपोबन बासी सा,
शैल थी जै हुईरी शरापै लायै ब्राह्मणी सौ तारी धीनीभाली जबै तेसरी दुआसी सी ॥ १

मीभी राजै लोकै रा घमंड तूसै भौनी शेट्ठ शिवजी रा बड़ा भारी धनष मरोड़िऐ,
आऐ तबै बौरा तूसै जनकै री जाई सैंघै चांडू पर्सरामै री ता चांडा आऐ चोड़िऐ ।
बापू जो री गल सनी ऋषियां रा भेष केरु आऐ चित्रकूट तूसै राज काज छौड़िऐ,
डाह्नी एक हौखी राजै इंदरै री बेटै री ता भौंख काटी ऋषि री बिरधा मारी लड़िऐ ॥ २

पंचवटी रामजी करुप सूपनखा फेरी मारै खर, दूषण, मरीच, गिधा तारी ऐ,
मारिऐ कबंध सुगरीवा सैंघै मेल केरु बीन्ही शेट्ठ ताल सैंघै बाली शेट्ठ मारीऐ ।
बौन्ही ऐ समुद्र भालू बांदरै री मजतीऐ, लक्षमणा सुधजस आपणा खलारिऐ,
मारी खानदानी भाई बेटेआं समेत मारू रावण ता देवतै रै दुख शेटै टारीऐ ॥ ३

बड़ा भला माण्हू तेई बुझिऐ बभीषणा बै लंका पुरी मौंभै राजतिलक चढ़ाइऐ,
सीता होर लछमण आणे आपू सैंघै होर जेनरै बी संघी थी ते सैंबै आणे पाइऐ ।
बेटड़ी मरध हूरै भालदै अजुधयारै सैहरा कौछै रामैरा बमान पूजू आइऐ,
महादेव ब्रह्मा शुकदेव होर नारद ते केरदै सतुति नई रौजदै सराहिऐ ॥ ४

सारै चौदा भुवनैं रै जीउ ता परीउ आऐ नोकर ता टबरीऐ कुलराज धानीरैं,
बड़ा है अनंद हुआ मिले भाई भरत जी लुखड़ै बजोगै रै बस रै मन जानीरैं ।
बेद ता पुराण बाचैं भौ क्याडै राम जी रा केरू राजतिलक कुआज खानदानी रैं,
अंढा बांका बौगन फियाड़ दास तुलसिऐ भगती रा दान मौंगू रामचंद्र दानी रैं ॥ ५

कृष्ण जी री स्तुति

३

जे श्री कृष्णा जे भगवाना, सीभी देऊ रै देउआ ।
एई जनमा धाचणु आलैआ, तेई लोकै रै सेउआ ॥ १
धन धन भगवान नरायणा, देऊ देऊ शतु देऊ ।
भलैं बचाणे बै पापी मकाणे बैं, आपु जन्म लेऊ ॥
धन सालै रा भादरु महीना, धन शोभली ऋत बसीती ।
धन औज का औठवीं ध्याड़ा, निहारी औधड़ी राती ॥ ३
राजैं कंसैं री कैंऽदी धालदैं आमा बापू रे पेटा ।
सोला कला सैंघैं जनम लैइऐ, बणु आठुआं बेटा ॥ ४
तेरैं चलितर सारै सँसारा न, सीभी भांतीऐ न्यारै ।
पापी मारीए धरमी लोका तैं हौथ हौथुऐ तारैं ॥ ५
जबैं आसरी धौरती पांधे, पाप भोरुआ बोहू ।
भांति भांति रैं जनम लइऐ, पाप द्रुवड़ा शोहू ॥ ६
सीभी धरम ग्रंथा नटारिऐ, कौढ़ी होछणी गीता ।
कलिजुगैं रैं लोका तारणे बै, ज्ञान कठेरिऐ दीता ॥ ७
आसा देवशा बैं अकल देई, भलैं लोकै री सेवा ।
पुना धरमा न शरधा लोड़ी ता तेरैं चरणा न रेवा ॥ ८

कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा

४

सारी विंदरा जौणनू आला, औज तेरा जनम ध्याड़ा ।
औज सरगै रा द्वार ध्वाड़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ १
कैद खाने जनम लैऊ, गोकला जाइऐ गभेऊ ।
तौरु जबना जी रा ताड़ा, कृष्णा जी रा जनम ध्याड़ा ॥ २

चौऊ कुंठै रा जै मालक सौ दसोधा रै फाढ़ै बालक ।
बणी गैऊ बैकुंठ फाढ़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ३
पूर्ण ब्रह्मा जै शोहरू आला, तेई छालदा कंस काला ।
आपणे आपै रा बगाड़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ४
कौम याणू रै तुआरै, बोहू सारै राकस मारै ।
भालना शोहरू गुआला, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ५
पापियां री गंध मकाई, आगो बै गीता बणाई ।
धर्म ग्रंथां रा चुआड़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ६
तू करार आपणा नभेई, 'बेवशा' बै हौथ देई ।
बौगत सा किछ आउ माड़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ७
जन्म अष्टमी पर्भ प्यारा, कुल्लू चमकू औज सारा ।
ढाल पुर ता शहर खाढ़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ८
आसा लोका बै अकल लाई, दूर केरी हाही खाही ।
पौउ नी लोड़ी पुआड़ा, कृष्ण जी रा जनम ध्याड़ा ॥ ९

राम गीतावली के एक पद्य का कुलुई अनुवाद

५

माई कशलया बेटे निहालदी, मनदी शगन केरदी भाठा ।
बोल ड़ै काउड़ै सच जै कबै, एजणा बचड़ै तू जै बाठा । १
दूधा न मूछिए तौभे खियानू, भौतैरै गाजीआ भौरिए डूने ।
चूंजी बै तेरी दियानू ड़ै मौढ़ने, औज सन्यारा न कुंदन सूने ॥
सीता समेत जै भौरिए हौखी, भालिए लानू ड़ै कालजै शूने ।
लखण रामा, ऐ पौढ़ तू पाठा । मनदी शगन केरदी भाठा ॥ २

बौणा न एणे रै नेड़ धियाड़ै, जाणीऐ हुई री माई वियाकल ।
पंडत जोतषी शाधिऐ तिनरी, बौदिऐ जौंवा ता पुछदी गल ।
बोला जी शास्तर रौहू की हाठ । मनदी शगन केरदी भान ।। ३

तेई है बौगतै कौसकी लोकं, भरता आगै न खबर आणी
रामे रै एणे री तुलसी शूणी, मौरदी म्हौठी बें मिलू जै पाणी
एतै री तैयें थी काउड़ा बाठा, मनदी शगन केरदी भाठा ४

भारत वर्ष री स्तुति

६

धन धन म्हारै हिन्दु सताना
सारी दुनिया न चमकी शाना
मूंडा पांधै तेरै हीऊंरी पघड़ी, काया नाजैरी हौरी
नाल् नौई तेरी लोहू री सीरा, चूल फूलिये भौरी
सती बेटड़ी जोधै जुआना ॥ १ ॥ धन धन म्हारै०
बाल बचैं तेरै शौठ करोड़ा, घौर बौसदा घौणा ।
गोरू भेड़ा हाथी घोड़ै पखेरू, फौला बूटी रैं लौणा ॥
खात्ती भोरू बे अंता खजाना ॥ २ ॥ धन धन म्हारै०
धन धन तेरै लीडर लोका, तिन रंगा नशाणा ।
धन तेरी चौऊ सिंधै मूरत, जन गण मन गाणा ॥
सचा सौदा ता बडी दकाना ॥ ३ ॥ धन धन म्हारै०
एक जेहै तेरै बेटड़ी मरध, सिभ धरम जाती ।
सारै मुलख सी मितर तेरै, पंच शीलै री शांती ॥
केरै 'बे वशै' सिभ समाना ॥ ४ ॥ धन धन म्हारै०
जाण कार सी घौरै रै बडकै, सारै टबरी माणू ।
गोरै चोरा बै फेटै डकाइऐ, राज आपणा आणू ॥
सीभी गौमदा रचू बधाना ॥ ५ ॥ धन धन म्हारै०

नुआरा हिमाचल

मिश्रित कुलुई ७

देश हिमाचल न्यारा हो, जीहां भियांसरू तारा हो ।
उच्चे पर्वत हिउआं ढकीरे, सड़का ता जीहां सर्प चली रे ।
चढ़दे ट्रक ता कारां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥ १

चीलां दियारां बभ्भां रे जंगल, बकरी भेडां गोरू रे दंगल ।
उचियां निठियां धारां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥२

पथराली जीमी अंबर पाणी, भाग भरोसे ही जान खपाणी ।
लगदां पाणी कियारां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥३

बाग फलां रे चार किनारे, गीत रणकदे घासणी धारे ।
जातरां री भरमारां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥४

देवियां देवते ढोल नगारे, पूजा ता भगती पुछ पधाड़े ।
नाटियां नोखा नजारा हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥५

डुघड़े नालू खड्डां सुकियां, कई बसाती वधियां ।
हीऊं पाणी री फुआरा हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥६

लोक भले पर वीर लड़ाके, डाकू मंगते ना चोर उचक्के ।
भोलियां बांकी नुहारां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥७

दुर्गा भवानी संसारा री अम्मी, म्हाचलारे घरा आई जम्मी ।
वैरियां रा निपटारा हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥८

बांका हिमाचल नोखा नजारा, दिखणा बसणा सुन्दर प्यारा ।
संगतरेयां रीयां फाड़ां हो, देश हिमाचल न्यारा हो ॥९

गान्धी

८

जौमदै आऐ आसरै देश बड़े न बड़े माण्हू, ।
देउ तुआर ता ऋषि महातमे सर्ग पयाड़ा आणू ॥१

की सँसार ता कढा प्रभेसर भेत थी पछियाणू, ।
कूणा सी आसै ता कीं जीबै जौ मं कौखै बैं जाणा ऐ जाणू ॥२

तंढा है गांधी महात्मा जौमू थी, हिन्दुसताने रै भागै ।
बौरशा शौउ न पहलै, जबै भाग गरीबैं रै जागै ॥३

पछमी भारता लाका सौराष्ट्र, पोर बंदरै री गादी ।
राज कोटै रा सिरी बजीर थी, कर्म चन्द जी गांधी ॥४

तेई रै घौरा न जन्म लेऊ, मौहन दासैं रै नाएं ।
धनी ता धरमी घौर थी चौखा, मनीरा नगरे गाऐ ॥५

पौढ़िए घौरा न नौठा बलाइती, बणू वकील थी बडा ।
खटणा छौडिये चैथूए लोकै री, मजती हूआ खडा ॥६

एकी लोकै सौ दखणी फ्रीकै, वकील आपणा केरू ।
देश तोखला जिकिए, ग्रेजेरा जुल्म गांधीऐ हेरू ॥७

देश बलाइती रौहै आजाद, पौढ़िऐ पहले जागै ।
देश होछणे पेट गजारैं बै, पिछड़ैं चैथणे लागैं ॥८

आसरा भारत लंका ब्रह्मा, ता पूरबी एशिया सारा ।
अरब जीकू फरीकैं मरीकैं बैं, चेथिऐ पाऊ निहारा ॥९

जीकुए देशैं रैं भूमिऐ बौसणु, कौढैं गदोड़िऐ फेटैं ।
घौरा गराहुँजी जगा जमीना, न कबजा केरिऐ बेठैं ॥१०

तूबकै तोर्फ ता बंब रैं गोलै, भूमिऐ बौसणू भूने ।
ते ता दियाउणे तीर कमाणिए, मारिए केरं तैं शूने ॥११

कुली बणाईऐ हिन्दुसतानी, देशा फकरी बं भेजे ।
तौखै पजेरिऐ केरी कुदशा, दर्गं बाजे अगरेजे ॥ १२

भारती, अरबी भूमिए तौखलै, होरा बी जूणा थी कालै ।
गोरै फरंगिऐ लूटी घशीटिऐ, कबजा केरिऐ छालै ॥ १३

काल् लोकैरी भाली कदशा ता सत्याग्रह पराऊ ।
बुरा नी बोलणा हौथ नी चंकणा, अड़िऐ मौंगणा न्याऊ ॥१४

मनी नी बधकी, चोड़े, कनूना, मुलख विपता खौही ।
गोरै पतारुऐ जुलम केरिऐ आखर मनणी पौई ॥ १५

शादी वियाह ता गुठै लुआणे रा, मुंडी रै पौंड आई ।
टैक्स लैआ थी हाकम गोरै, गला ऐ चोड़ने धाई ॥ १६

हिन्दुस्तान बी तंढा है जीकीऐ, डाहू थी कपटी गोरै ।
एई छड़ाणे री फिकर केरिऐ, आउ फरीकैं न ओरै ॥ १७

गांधी ऐ तौखैं न भारता एजीऐ, कांग्रेस चमकाई ।
लीडरा ढाबिऐ देशा छड़ाणे री एक विध समझाई ॥ १८

हाल थी बुरा हिन्दुस्ताने रा, आंगी थी केरी रै लोका ।
बडै लोका थी फरंगी रै वशा न होछै लोका बै जोका ॥१९

सीभ वर्ण धर्म जाती थी, एक दूजै बै लागू ।
फ्याइदा कंढै चलाकी गरेजै री, देश नी जबै थीजागू ॥२०

आसा बैं गोरै जै बाईका बोबू ता गल बुझुई माड़ी ।
औधा देश अपू बाइका केरिऐ ऐ गल नी फ्याड़ी ॥ २१

एक बाब परमेसर बेटे सी सिभ धरम जाती ।
हरिजन बीसी तेई रै बेटै, लाऐ गांधीए छाती ॥ २२

तबै ढोकुऐ जादी री जगा न, शस्त्र जोर नौ गौंठी ।
सरकारा अगैं तुबका तोफा, जात गोरी नरौठी ॥ २३

केरु औखै बी सत्याग्रह गरेजै री गल नी मनी ।
कैंद डण्डे ता फांसी ता गोली खायौ बी गलौ रै धनी ॥२४

बुरी दशा थी ग्रेजे रै राजा न आसै भालीरा तदी ।
देश भगतै विपता घालीआ, तबै पाई आजादी ॥ २५

राज पाट तेई नईं थी लोड़ी, राम राजा थी परांदा ।
घौर घौर मैं शांति पियारै रै, पाठ रौहू पढ़ांदा ॥ २६

एकी ध्याड़ै परमेसरा ध्यांदेया, गांधी म्हात्मा बापू ।
गोली मारी एकी आपणे देशीऐ, विष खाउ जंढा आपू ॥२७

गाधा नियाऊ औउखै बौगतै, कौम धाउड़े छटैरै ।
राम राज थी देशा न आणना, तेई पिछली घेरैं ॥ २८

दुनिया देशै रा मारगा केरू डै, ऋषि माहातमा ब्यालू
सती तपी ता माण्हू नकौला थी, प्याशा सौ फूकरै शालू ॥२६

सारा संसार सा गांधी रा ऋणि, मता थी तेई रा स्याणा ।
मारना काटणा कोई नी कौसी, जुगती जीणा जियाणा ॥३०

धाउड़े कौमा बैं छौड़िए जुणी बैं, नौठा माण्हू 'बेबशा' ।
पूरैं केरने सीभीऐ, छौड़णे छूंघ छेड ता नशा ॥३१

गान्धी जी रै ग्यारा वरत

६

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रहः, ।
शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जनं, ॥
सर्व धर्म समानत्व, स्वदेशी, स्पर्श भावना ।
विनम्र व्रत निष्ठा से एकादश सेव्य हैं ॥

१ अहिंसा अहिंसा-कोई नी जीऊ दखेरने, काटगे ढीसणे खाणे ।
बूरा नी कौसी रा सोठणा केरणा, जाणिऐ चाहो नजाणे ॥१

२ सत्य सच, प्रमेसर सचा न बडा नी तीरथ वरत दान ।
जूणिऐ सचै रा पकड़ू पाला, तेयै पराऊ भगवान ॥२

३ अस्तेय — चोरी नी बोलणी एतरी केल्ही, जैं चीजा लोकैं री चोरी ।
गजारैं न बधकी चीजं री तृष्णा, मना न आई लोड़ी ॥३

४ ब्रह्मचर्य — ब्रह्म चरज सचा परमेसरा, धर्मा पराणे री कला ।
बेटड़ी मरधै खोटा नीं केरना, मर्नें बुहारैं ना गला ॥४

५ असंग्रह — जोड़ना बाटणा गरजी मुजब, माल नी ढ़ाबणा बोहू ।
लालचा लोभा न भलै ता बुरे रा, ध्यान नी लोड़ी थी खोऊ ॥५

६ शरीर श्रम — सीभी बै लोड़ी थी पौरसू चूड़दैं, केरिऐ पौजणू खेऊ ।
ऐका नी लोड़ी थी छूकीदै पीटदै, एका नी डेहरै देऊ ॥२

७ अस्वाद — स्वादै रा बादै रा अंत नी कोई बी, चटका स्वादै रा बुरा ।
स्वादै रै मजैं बै छौडणे बांफी, कदी नी पौड़दा पूरा ॥७

८ सर्वत्र भय — वर्जन, डौर सा शतरू माण्हू रै मनै रा, भसकैलाऽसा भूकू ।
लोका सर्कारैं री डौर नी मन जैं, सचं री धीरैं बै भूकू ॥८

९ सर्व धर्म समानता, धरम सिभ परमेसरा आगै, पुजणे आली सी बौता ।
आपणी बौतीऐ हौंइदे रौहणा, होरा बैं टोकदै मता ॥९

१० स्वदेशी — धौरा गराएं रा लाकैं रा देशै रा, सट समान लगाणा ।
कौतणा, बुणना, कुटणा, पीशणा, देशें रा देशा न खाणा ॥१०

११ स्पर्श भावना, उथडै निशटै भीतरू बाहँकै, छुंघु नछुंघणु सारै ।
बाव प्रमेसर एक सा सीभी रा, अपू न सिभ भरारैं ॥११

गीता री 'स्थित प्रज्ञ' माण्हू री पछियाण

१०

अर्जण जी ऐ पूछू

स्थित प्रज्ञ समाधी न बेठा दा कुण, बोलणा कृष्ण जी ।
कंढा हौंड़दा बेशदा उठदा, कंढी तहैं सौ ठूसदा की ? ॥

भगवाने दसू

लोभ चाउ ता मनै री भाभा, शुण अरजणा ! छौडा सर जदी ।
आपणे आपू न मस्त जबै जैं, स्थित प्रज्ञ बोलीणा नदी ॥२

सुखा न जुण नी फुलदा नां ता, हादीदा पौड़िऐ जूनी ।
भीक भुरी ता डौर नी जौस बैं, धीर बुधि सौ मुनि ॥३

गौमदी गला बं खुशी नी जुण ता, माड़ी नी गला बं रोंदा ।
भलें ता बुरे न जुण नी लेसीदा, धीर बुधिया सौ होंदा ।।४

मुंडी ता टूंडी बे कछुआ जंढ़ै जे, आपू हेठै सा भाड़ा ।
भोगा न इंदरी भाड़ला तंढ़ै जै, स्थित प्रज्ञ सौ फियाड़ा ।।५

छूटी जाऽसी भोगणे बाभी ऐ, भोग बी काया रै सारै ।
लाग ब्री तीनरी जाऽसा तबैं, ऐसा आतमा रै बुहारे ।।६

त्रबै बालहुई इंदरी जतन जाण कारी, बी चाहे केरा ।
जोरा जबरिऐ माण्हू रै मना लै, आपू धीरै सी घेरा ।।२

जोर केरिऐ ईना बें गोटै ता, मेरी सरना न पौऐ ।
ईना इंदरी बे जीतणू आला, स्थित प्रज्ञ होऐ ।।८

विषै भोगा बै सोठदै सोठदै, मन तीसै सा टीका ।
तबै पै जागा सी मनै री भाभा, भाभा चूटीऐ भीका ।।९

भीकै जौमा सी भरम मना न, माण्हू बेउरा तबै ।
बुध मारिया सा बेउरै फिरिऐ, सौ मूई ता डूबै ।।१०

ईना इंदरी भोगदी घेरै, बुधी ओपरी डाहें ।
मन मौउजीरी विरती लाइऐ, प्रसाद आतमा पाऐ ।।११

हुआ प्रसाद जबैं अर्जणा, तबै दुख निभदै जाणे ।
खुशी माण्हू री अकल रौहा सा, सदाहें एकी ठकाणे ।।१२

नीमा धरमा बांभी न अकल, भावना तबै नी भली ।
भावना घटी नी मना नी शांति, शांति शांभी नी तसल्ली ।।१३

ईना इंदरी भोगा न मनै, जुण इंदरी छेड़ी ।
सौ तीणा सा अकली तढ़े, जंढ़े जै बागर पाणी न बेड़ी ।।१४

तूईं री तैयें पै महाबाहू जी, जुण मनो काबू न आणे ।
आप आपणे भोगा न इंदरी, तेईं री बुध ठकाणे ।।१५

सीभी जीवै री रात सा जबै, जागदे तबै सी जोगी ।
तीना मुनि री रात सा जबै जैं, जागदै हो आसी भोगी ॥१६
चौऊ धीरै न भौरीदा नौइऐ, ताइम सागर भाला ।
सुखी सौ भोग डूबदैं भूणी न, सुखी नी भोगणू आला ॥१७
सीभी भाभा बै छौगिऐ जुण जैं, माण्हू न गरजा रौहैं ।
माया ममता ह-ऊंता छौडिऐ, शांति आश्रा सा सौहैं ॥१८
'ब्राह्मी स्थिति' जबै मिलू परमेसर, मोह नी तेता रौहू ।
एसा न पेशिऐ मौरदी बेरै, ब्रह्म रैं मजे न पौऊ ॥१९

गुरू नानक जी री वाणी 'जपु जी साहब' रै शब्दै रा कुल्लुई चुआडा

११

असल सत सा सीभी न बडा नां, सी तेई रा एक ओंकार ।
प्रगटा आपू ता सौउंतं बौसदा, तेयैं बणाउ ऐ सारा सँसार ॥
तेईं री काया ना बौगत बेला, तेईं नी कौसी री डौर बकार ।
किरपा तेई री बधकी शदर' सौहै सा सीभी न बडी सर्कार ॥१
सोठीऐ सत नी मिलदा कौसी बैं, सौठदै बेशा जै लखा हैं बारी ।
गुड़क बेशिऐ तबै बी तंडा है, लाईऐ बेशा जै केतरी ताडी ॥
भुख पकारिऐ रौजीदा नई, ज बौन्हिऐ भौरिऐ बुजकै भारी ।
सँघै नी चौलदी बुध सियाणे री, ढाबुई बेठै जै लख हजारी ॥
कंढै परांइदा सत परमेसर, चोड़ीदी भूठैं री कैइ दी घाली ।
नानक बोला सा मरजी तेई री, लिखुई चौलणी संघण म्हारी ॥२
हुकम तेई रा ढूणीदा नई जै, हुकमै बणा सी घाट नुहारा ।
हुकमा लयै पै बणा सी बडे, ता हुकमे लुका सी जीउ सँसारा ॥
हुकमै होआ सी भलै ता माड़ै बी, औउखी सौउखी हुकमा सारा ।
एका बै हुकमै मिला सा गादी, हुकमे होरा सी फिरा नकारा ॥
हुकमा भितरैं बिदरा सारी सा, हुकमा बाभी नी कोई बुहारा ।
तेई रा हुकम जबैं फियाड़दै, कोई नी केरदा हांऊ हँकारा ॥३

केरला कुण सराहुती तेईरी दसीदा नईं जै जाणे नशाण ।
केरनी कौस सराहुती तेईरी, कठण जौसरं विदया ज्ञान ॥
माण्हूं बणांदा ता केरदा छार बी, एकी रै होरा न भौरदा प्राण ।
बूझी दा दूर सा मना न नेड़, जै केरै सराहुती कौसरैं त्राण ॥
लख करोड़ है ढूणदै रौहात गल नी निभदी तेईरी जाण ।
देण नी निभदा मौंगदै थकदै, केतरै जुगा न खांदे सी खाण ॥
धरम पंथ सी तेई रै हुकमैं, नानक कोई नी ओथ ठकाणा ॥ ४

सच्चा सौ मालक बी नां बी सचा, सची सी तेईरी मुकती गला ।
देंदा है रौहा सा मोंगदी दुनियां, दै दै बोलिऐ केरदै हला ॥
कीजीरी तेई बैं दे आम डाली, तेई रै घौरा बैं भालदै भला ।
भूरदा आसा बै अरज शुणिऐ, कौखै न केराम ढूणन कला ॥
तड़कै उठिऐ सोठणा मालक, अरजा केरनी ताड़ना पाला ।
पिछलै करमै मिलीरी काया ता तेइरी दया न मुकती पाला ॥
नानक बोला सा बुझणी तेइरी चौउ चकुंठा न सचै री कला ॥५

सोठिऐ मिलू बणायै नी बणू आपसे आप सा सौ न थौहा ।
पूजू सौ जूणिऐ तीनं पराऊ, नानक मालका पूजदै रौहा ॥
ढूणदै शुणदै सोठदै तेइबैं काटीऐ दुखा सा सुख परौआ ।
नाद ता वेद सी गुरु रैं मुखा न, गुरु रैं मुखा न सिभ सी होआ ॥
गुरु परमेसर पारबती गोरख ब्रह्मा बैं जाणदै रौहा ।
तेई ता गुरु बैं हाऊं सा जाणा, दसनू कंढै जै ढूणना पौआ ॥
मूं बैं सा दसूदा गुरुऐ सीभीरा जीबैं रा दाता सा सोठदै रौहा ॥६

तीरथा न्हाणे रा तबैं सा मजा जौ पुजदै तेई परमेसरा आगै ।
तेई नी गौमै ता चीधिऐ कीजी बौ काया बौ पाणी न चोकदै लगै ॥
जेतरी दुनियां भाली ता कोई बी करमा घटी नीपुजै न भागै ।
चमकैं अकल हीरैं जुआ हरा साही जै गुरु रै मंतरैं लागै ॥
गुरुऐ दसु जै सारैं संसारै रा एक सा दाता नी बिसरु भागै ॥७

राजे रघुबीर सिंघा शांगरी आलै रा मौरन

राजै साहबा शांगरी आलेआ, तेरी गीता की लाणी ।
रघुबीर सिंघ राजै री कथा, होई चौली पराणी ॥१
मान सिंघै री जीतुई ठाकरी, शांगरी नशाणीं ।
मान शान डाहे काइम कूलूरै, खान दानी पराणी ॥२
कंडी शोभली सूरत मूरत, बांकी नीत ता बाणी ।
सचा लीडर कौल ना कपट, सची गला जनाणी ॥३
बुध न्याऊ नसाफै री, बृकम बीता आगी तै आगी ।
सोंठी शूणीए तेरै चलितरा, हौंखी बगदा पाणी ॥४
नई छौडी रगनाजी री चाकरी, कुल रीत नभाणी ।
केरी दशमी औथी न, धाउडी नौठा एक वधाणी ॥५
कीबं हुआ बे लौगत मौरना, नौली गल ऐ जाणी ।
बीज पौई जंढी एकी चमाकं न, फीरी दुनिया काणी ॥६
नीभू खौल्हड़ खरच राजेआ, नीभू तौंग्रड़ पाणी ।
अढ़ा गोभुआ एकी पटाकै, न नइ छौड़ी नशाणी ॥७
रोंदी विंदरा हुई बेबश ता ढ़ूई वेहे री राणी ।
दादी हिंडमा रै फाढ़े न, नौशिऐ सूता पोचा वधाणी ॥८

गसाई तुलसी दास जी—राम चरित मानस

रा एक टुकड़ु अयोध्या कांड राज तिलकै री तियारी कुलुई बोली न

१२

छंद दंडक

फाढ़ै पांधै जौसरै हिमाचनै री बेटी उमा, मूंडा पांधै देवतै री नौई माई गंगा सा ।
मौथै पांधै चंद्रमा ता गौला न सा विष होर, हीका पांधै जौसरै ता खड़पा भजंगा सा ।
जुण महा देऊ सारी दुनिया रा मालक सा, सदा सौहे जुणिऐ भभूता लाई अंगा सा ।
सौहे शर्व शिव जुण सौउंते बराजीरा सा, रक्षा करै आसरी सौ शंकर नशंगा सा ॥१

लागी राजगादी फूलू खुशिऐ नी जुण,
जबै हुआ बनबास तबै दुखै नई झाडुआ।
कमलै रा फुल रघुनंदने री मुख शोभा,
भला केरे केरैं लोड़ी औउखा नवाडुआ।
नीलोफर फुला साही शाउँलै नरम अंग,
बांवी धीरै जौसरै बराजीरी सी सीता जी।
डौकीरै सी हौथा लायै तीर ता कमाण बांकै,
मौथा टेकू तुसा आगै रघुकुल पिताजी ॥२

जदी नौरै राम जी वियाह् केरी घौरा आऐ,
रोज नौंवी मौजा ता वधावे लागै बाजदै।
पुना परतापै रैं बादल सुख बरसांदैं,
चौदा लोक परबत रूपा न बराजदै।
ऋधि सिधी धन माल नौई साही उलड़िऐ,
ढाबी दी अजुध्या रै समुद्रा मौंझै भगदै।
शुचै बड़मूलै हीरैं मोती साही बांकै सिभ,
बेटड़ी मरध जाती भाती रै सी सजदै।।३

नगरै री शोभा किछ ढूणने री गल नई,
बुझिया थी ब्रह्मा आगै एतरा है जोर सा।
सीभी गलैं सुखिया सा जुधया री प्रजा,
सौ राम जी रैं चंद्र मुखा भालदी चकोर सा।
सुखी सिभ माई होर सैंघणी सहेली जबै भाली,
लूड़ फौल देंदी मन रैं मनोरथा।
राम जी रा रूप रीत नीत ता सभाउ भालैं,
नौचा राजै दशरथ जी रा मन मोर सा ॥४

दोहा :- सभै मना न चाहँदै, सुखदै देउ महेश।
देंदे आपू रामा बै, गादी म्हारै नरेश ॥५

बोलू राजै शूणा ऋषि मुनी रै प्रधान होरो, हुआ अबै राम सीभी गलै जाणकार सा ।
वजीर कर्मचारी सिभ अवधै रै वासी जुण, वैरी सा कि मित्र चाहे कोई एक सार सा ।
मूं है साही हेरा सीभी लोका बै सा प्यारा राम, बौरै लायै तुसरै ऐ लैइरा तुआर सा ।
मोह सिभ एई सैंघैं केरा सी तूसा है साही, बाह्मण सी जे नाम तीनरा परुआर सा ॥ ९

जीने गुरु चरणे रा माटा लाऊ मौथै सैंघैं, तीनै केरू काबू सारा सुख डाहा बुझिऐ ।
आसा साही एतैरा तजरबा नी कौसी बै जै, मिलु सर्वस माटा चरणे रा पूजिऐ ।
एक भाभ रौही अबैं मेरे मना महाराज, तुसरी है दया सैंघैं ऐबी जाणी पुगीऐ ।
हुऐ मुनिराजी भालू सचा प्यार राजे रा ता, बोलू केरा हुकम नी डाहणी गल गुझिऐ ॥ १०

दोहा :— नां जश सभ किछ देणिया, तुसा रा सा मा:राज ।
इच्छा न आगैं फौल सा, तेरा नृप सरताज ॥ ११

हुये सीभी तैंहें परसिन्न गुरु, जाणू जबैं, केरी मीठी मीठी गला सैंघैं राजै अरजा ।
केरा महाराज तुसैं हुकम ता देई देंदा, राम चंदरा बैं जुबराजा आला दरजा ।
होंदा आसा आसतै ऐ उच्छव ता जलसाबी, हौखीरा सुआद लैई लैंदी सारी परजा ।
दया तुसरी ऐ शिवजी ऐ सिभ पूरी केरी, पूरीदी ऐ भाभ ता नभेरी देंदा फरजा ॥ १२

फीरी नी थी झौंख काया रौहंदी की जांदी लागं, रौहंदा नी कौसी गलैं पीछे पछताईणी ।
खुशी हुऐ मुनि शूणी गल दशरथ जी री, मौउज वधाई खुशी मजै री लभाउणी ।
शुण राजा जौसरैं वरोधी पछताईया सी, जौसरैं भजना बाझी जौलनीं नी जाइणी ।
सौहै परमेसर सा बेटा बणू तेरा औज, रामा बै पवितर परेम मन भाइणी ॥ १३

दोह :— राजा छेकें देर नी, केरिऐ कुल समान ।
रामै री गादी जबै, सौहैं बेल प्रमाण ॥ १४

खुशी होइऐ राजा नौठा तबै बेढ़ै भीतरैं, मलाजम सुमंतर वजीर शदाइऐ ।
केरी तीनै टुं बलिऐ जैं जिया महाराज, राजै मूल गल दसी तीना बै शणाइऐ ।
लागी मेरी गल सीभी पंचा बै जं शोभली ता, देआ राज टीका रामचदरा वैं लाइऐ ।
शूणी गल राजै री वजीर होरा हुऐ खुशी, हौरा फीरु बूटा जंढ़ै ठीक पाणी पाइऐ ॥ १५

केरी तबै अरज वजीरै हौथ जोड़ देआ, मीलै सरकारा बै करोड़ा साला जीउणा ।
भली सोठी महाराजें मुलखौरै भलै आली, छेकं केरी देआ नई बोहू बलगीउणा ।
बधी खुशी राजौ री वजीरै री जै गल शूणी, जंढी लूड़ बधासा चढ़ाये बड़ै भीउणा ॥ १६

दोहा :- राजै बोलु वसिष्ट मुनि, जै किछ हुकम शणाए ।
रामै री मादी तैं यें, केरा कुल उपाए ॥ १७

बोले महाऋषिऐ ऐ खुशी होयै मीठीं गला, पाणी सीभी तीरथै रा ढाबा एक आणिऐ ।
ओखती बनासती जलाड़े पौचा-फूल-फौल, होर बोबहू सारी चीजा दसी तीनै गौणिऐ ।
मृग छाला चौंउरी अनेक भान्ति कपड़े री, रेशमी नुआलै कई रंगे रै सजाणिऐ ।
हीरै मोती रतन ता होरा चीजां सैंकड़ो ते राज गदी आगै लोड़ी आणी पछियाणिऐ ॥१८

जंढा-जंढा वेदा न वधान सा सौ दसू बोला, ताणी देआ नगरा न रंगो रंगी चानणी ।
फौला सुध अंबैरै सपारी रै बी बूटै आणा, गड्डा शहरा फेर सेंघै गोल्ही-गौल्ही साजणी ।
चौक पूरा हीरै मोती मणियां रै बांकै-बांके, साजणे बजार तीसै बंदन माला बौन्हणी ।
केरा सीभी भांतिऐ बराह्मणे री सेवा होर पूजा गणपति कुल देउ देवी मनणी ॥ १६

दोहा :- तोरण कलश धजा सजा, हाथी घोड़ै रौथ ।
मनिऐ मुनि रा हुकम सिभ, लागै हौथो हौथ ॥ २०

जंढा कौसी माण्हू बै हुकम मुनि होरै केरू, तेयै शटाशट शेट्ट कौम सौ नभेरिऐ ।
जौस गलै राम जी रा होऐ कल्याण भला, राजै देऊ साधु ता बराह्मणा रवेरिऐ ।
शूणी जबै लौकै राज गदी री खबर तबै बुधियान घौर-घौर बाजै लागै बाजदै ।
लाग सीता राम जी री काया न शगन होंदै, मिधै लागै फड़कदै भलियाई साजदै ॥ २१

खुशिऐ ता भूरदेया आपू मौंभै ढूणुऐ ते, भरतै रै ऐजणे री बुझिया नशाणी सा ।
हुऐ बोहू रोज अबै लागा बुरा तेई घटी, तेई मिलणे री ईना शगना शणाणी सा ।
नई कोई दुनिया न भरता न प्यारा आधी, तेहै लागै शगन ऐ शास्तरै री बाणी सा ।
राम जीबै भरतै री याद एंदी रात ध्याड़, कछुऐ रै मना जांढी डाने री कहाणी सा ॥ २२

दोहा :- रौणक बधी नरौलै री, शुणिऐ खबरा बाँकी ।
सागर छाली उछलदी, भालिऐ चंदर भांकी ॥ २३

बेढ़े जायै जणिए शणाई गल पैहले है, कपड़े ता गहणे रा नाम मारू लेइऐ ।
खुशी होयै तने मनै फुली सिभबेटड़ी सजांदी लागी मंगलौ रैं कौलशैवै लैइऐ ।
राणीऐ सुमितराऐ / बोहू मणिरतने रै, बांकै - बांकै पूरै बोहू ऐपण बणाइऐ ।
राम जी री आमै बड़ी खुशी होयै दान धीने, बोहू सारै ब्राह्मणा बै बेढ़े न शधाइऐ ।। २४

पूजी देवी ग्राएं रीता होर देउ नाग पूजै, बोलू फीरी देनू हांऊ होर भाग बलिरा ।
ज़ौस गलै होए कल्याणग श्री राम जी रा, देश्रा. दया केरी वरदान गला भली रा ।
गांदी ते वधावे लागी कोकला रै कंठा ग्राली, मुख चंद्रमां रा ता नैन मृग छेली रा ।। २५

दोहा :- तिलका ग्राली ग़ल शुणी, मर्ध बेटड़ी राजि ।
भाग चमकदै जाणिऐ, खूब सजावट साजि ।। २६

तबै द्याऐ शाधणे वसिष्ठ मुनि राजै होरै, भेजै राम जी रै बेढ़ै बुध समझाणे बै ।
शूणू गुरु होरा ग्राऐ एजिऐ परौली ग्रागे, टेकू मौथा राम चन्द्रै वशिष्ठ जी स्याणे बै ।
सौळा है समग्रीऐ, पूजिऐ ता ग्रर्घ दे यै, ग्राणे बडे माना सैंघे हांघरै बशाणे बै ।
बोंदीं जौंघा दूही दूहराऐ सीता सुध जौड़ैं दूहै हौथ तीने हूकम फरमाणे बौ ।। २७

बोलू आए मालक जै चाकरै रै ग्रोबरै न ऊंघ भलियाईरा कशगने रै नाशा बौ ।
पर महाराज गल सुलटी ता ग्रंढी ती जै, कौम थी ता ग्रापू ग्रांधै शाधी लैंदे ग्रासा बौ ।
छौड़ी बड़ियाई केरी भूरी दया ग्रासा पांधै, केरिऐ पवित्र ग्रौज ग्रासरै निवासा बै ।
केरीदेआ। हुकम जै होला कौम ग्रासाजोगा, मिली जालाचाकरीरा पुन मूंबौ दासा बौ ।।२८

दोहा :- ग्रादरैं री गला शुणी, तिने सराहै राम ।
शिबौ नूं ग्रंढा ढूणदा, सूर्ज कुलैरी जाम ।। २९

राम जी रैं गुण ता सभाग्रो बै सराहिदेग्रा, बोलें भूरदेग्रा शुण राम ग्रंढी गल सा ।
सोहूं महाराज होरै तौबै देणी राज गदी, कूरु इंतज़ाम पोरैं सबीगेऊ जलसा ।

केरी लैंई औजा न बंधेज ब्रह्मचारी आला, विधि होऐ शास्त्रें री एता न कुशल सा ।
अंढी गल दसिऐ ता मुनि नौठा राजे आधै, सुन्ना रोही शुणदेआ रामे री अकल सा ॥ ३०
जौमी आसै एकी जगा संघ जबै सिभ भाई, खांदे, सौंदे सैंघै एक साथ न खलाऊऐ ।
हुऐ थी जड़ोलण जनेऊ जबै एक साथ, सैंघै चार भाई आसै कठ थी वियाहुऐ ।
अंढै नामी कुला न ऐ गल गोई बड़ी माड़ी, बड़ा भाई राजा होछै भाऊ बछड़ाऊऐ ।
भगतां रै मनै रा वकार हुआ दूर जबै, भाऊआं री भूरी लाये राम पछताउए ॥ ३१

दोहा लछमण ता बै पोहुता: मनदा खुशी अनंद ।
आदर मानै ढ्रणिऐ, पुजै श्री राम चंद ॥ ३२

बाजै लागै जोधया न भांतो भांत बाजदे ता, मौज मजा नगरा न सौऊंते मनाइंदा ।
लोका थी निहालदे जै पूजी जांदा भरत बी, हौखी रा सुआद कोई तेईं रै बी पाईदा ।
हाटी ता बाजार सैंघै गौल्ही-गौल्ही घौर-घौर, बेटड़ी ता मरधा न चरचा शणाइंदा ।
काल कबै जैहै होला लगन सौ तिलकै रा, होणी जबै राजगदी कौम मन चांहीदा ॥ ३३
बेशी जांदे सीता सुध सुनैं रै संघासणा न, होईं जांदी मनै री मरादा अंढी सोठदे ।
लोका थी निहालदें जै कबै जेहै काल होंदी, देवतै थी सोठदे जे कंढै गादी ठाकदै ।
देवतै नी गौमी अंढो जोधआ री धूम-धाम, चोरा बै नी प्यारैं जंढै जोथ प्यासै लागदै ।
बार-बार जौंघा बौंदी देवतेआं देवी री जै, देवतें रा कल्याण केर माई शारदे ॥ ३४

विपता आसरी भालिऐ, केर जतन तू औज ।
राम चन्द्रा वनवास दें, केर आसरी मौज ॥ ३५

देवतै री गल शुणी दुखी हुई सरसुती कमलै, रै बीणा जंढा पौंउ हीउ पाला सा ।
भाल पछतांदी देवी केरी भीरी अरज जै, माता तौबै रती नईं दोष एणू आला सा ।
राम जी बै खुशी ता वसोप्त किछ लागदा नी, तू ता माता खरी तहै तीना जाणा भाला सा
जा तू माता बुधिया बै आसा देवतै री तौंयें, जीउ सभ करमे रा दुख सुख भाला सा ॥३६
रोहा ता सी सरगा न कौम केरा निशठे सी, होरी री भलाई कदी देवतेआं साधी नीं ।
होणहार आगली रा केरु जै बचार तेसै, बुरा कौम मनणा ऐ कदी कौसी कवि नी ।
तबै नौठी खुशीऐ सौ दशरथ नगरी न जंढें, ग्रहदशा कोई करड़ी सा पाई थीनी । ३७

मूरख बेटड़ी मंथरा, कैंकेई री नकराणि ।
अकल मारिऐ तेसरी, बदनामी बै आणि ॥ ३८

भालू जबै मंथरै नगर झकमकदा ता, चौऊ पासो बाजा गाजा बाजदा बधाई रा ।
पूछे तेसैं लौका अंढी कीजी री सा धूम धाम, शूणू राज तिलक ता होल पोऊ दाही रा ।
सोहू तेभौ मूरख कजातणिऐ "कंढी तईं रातो रात बिगड़दा कौम ऐ बणाई रा" ।
जंढे कोई जंगली री बेटड़ी 'मखीरा आलै छतै तयें जतन बचारदी सफाई रा ॥ ३९

हौयै बड़ै दुखी तबै नौठी कैकेयी आगै, हौसदेआ पूछी कीबै मंथरा दुआस सा ।
इस्तरी चलितरै रै होखू रौही शेटदी जबाब नीछी देई लागा लौमा लौमा स्वास सा ।
'धीनीं होली लछमणे अकल ऐ बूझिया सा; बोलू राणी हौसिऐ तू केरा बकवास सा ।
नीछी ढूणी तबै बी सौ दासी रौंड पापण ता खड़पणी साही लाऊ छौडणा दुआस सा ४०

दोहा:- बोलू राणिए डौरदै, तू ढूणदी किबै नीं ।
महाराज ता राम बी, राजी खुशी ता सी ॥ ४१

लछमण, भरत ता शत्रुघन, सिभि री खबर शणा ।
अंढा शूणू मंथरै, लागी कालजै दाः ॥ ४२

कीबैं कोई आसा बै पढ़ाला माई अकल ता, आसरा सा कौसरा जे बकवास केरना ।
मौउजी न कुण रामचंदरा न पोरै औज राजे साउ कुण औज गादी न बशेरना ।
भाग हुए शोभले कशल्या रै बड़ै जूणी कठण घमंड हुआ कालजै पड़ेरना ।
भाली धूम धाम हुई दाहू बड़ी मेरे मना, अंढा ठाठ बाठ तूसा आपू जाये हेरना ॥ ४३

बेटा परदेशा न नी भौंख रती मेरे मना, बूझा सी जै महाराज काबू मेरे आई रै ।
पलंग तलाई पांधै नीज मीठी एंदी तुसां, भाली दा नी खोट राजा जी री चतराई रैं ।
बूणी मीठी गला मन कपटण जाणिऐ ता भिड़किऐ बोलू चुपमौर फाफा कुटणी ।
दूजी बेरै ढूणली जै अंढा घोर फोड़नीऐ तेरी लौमी जिभ भूं सा खरी तईं लूणनी ॥ ४४

दोहा:- लाटै काणे कूबड़ै, कपटि मैझरी जाणि ।
बेटड़ी सौ बी सेउका, बोलिए मुसकी राणी ॥ ४५

बौनी मैं सलाह तौबै हायें भल बोलणीए, सुपने बी तौ पांधे झीक मूंबै आई नी ।
जदी तेरी गल होली पूरी सौ है धन भाग, तेई ब्याहे साही कोई घड़ी सुखदाई नी ।

बडा भाई मालक ता हुछे भाई सेवादार, आस रवि कुलै री ऐ नीत बसराई नी ।
सच जाणी कालहोला रामाबै जे राजटीका, भाली तौबै धीनी मुहांमौंगी मैं वधाई नी ॥४६

सिभ आसे सी कशल्या साही एक सार, एक जेही आसै राम चंदरा पियारी सी ।
मू पांधै रामै रा पियार किछ बधका सा, परखी मैं कई घेरे भूरी है नुआरी सी ।
मू बै ता जैदेला ब्रह्मा आगला जनम तबै राम चंदरा लोड़ी बेटा न्हूश सीता प्यारी सी ।
प्राण न बी बधका पियारा मू बै राम चंदर, राजा होला तेरे मना कीबै लागी आरी सी ।४७

दोहा : भरतै रै सो: बौलू तू, कपट छौडिऐ वैर ।
खुशी न ता दुख केरदी, कारण प्रगटा केर ॥ ४८

एकी घेरे ढूणिऐ है पाई लैई पुरी मैं ता, दूजी घेरैं ढूणनू ता जिभ शेटी लूणिऐ ।
भौनणे है जुगता कपाल सा नभागा मेरा, दुख हुआ तूसा भलै आली गल शूणिऐ ।
हाऊं लागी कडुई ता ने लागै मीठै तूसा, केरा सी जै मीठी भूठी गला गौंठी ढूणिऐ ।
आगो बै के राम अबै आसै बी खशामदी है, नी ता रात ध्याड़ चुप बेशी रौहै कूणिऐ ॥ ४९

केरी परमेसरै करुप हुई वेबश, धीना सौहै मिलणा जे बाहू सौहै लूणना ।
कोई बणे राजा होणा आसा बौ की बाधा घाटा रौ:णा नकराणी आसा राणी नई वणना ।
आसरा सभाऊ गोऊ बड़ै वूदै फूकणे बै, बुरा होए तूसरा सौ जांईदा नी भलणा ।
तेसौ गलै लाई थी मैं गल वौगते री, हुई मेरी बडी भूल राणी पौउ माफी मौंगणा ॥ ५०

दोह : मीठी कपटी गला शुणी, बेटड़ी बुधणि राणि ।
देवै री मायै मोहुई, लाई सौ पतियाणि ॥ ५१

घड़ी घड़ी आदरा न लागी राणी पूछदी सा जंढै गीता गायै मोहा भीलणी सा हिरनी ।
सोठू जंढा मंथरै थी दाऊ तंढा लौगा गैऊ, जंढी होणहार होणी तंढी बुध फिरनी ।
तूसै पूछा सी ता मू वै ढूणदेआ डौर लागी धौर फोड मेरा नां फीरी तूसे धरनी ।
खरी तहैं परखु वशाह तवैं जोधेआरी, लाई साढ़सती ऐ कपट गला भौरनी । ५२

बोलू तूसै राम सीता तूसा बौं पियारे जंढ़ै, राम बौ बी तूसा सैंधे तेबड़ा पियार सा ।
चलै नौठै अबैं ध्याड़ें तंढी जवै गल होंदी, प्यारै बी बणा सी वैरी बौगते री मार सा ।
पाला सा सूरज जूण कमलें री फसला बौ, रुड़ी मौंझै सौहै केरी देंदा तेई छार सा ।
सौहुकण तूसारा जलाड़ा चाह पेचणा सा, तेई बौ बचाणे तैयें लाणा फेर वाड़ सा ॥ ५३

दोहा:- सुहाग भरोसे फिक्र नी, काबु न बुझिऐ राऽ ।
मन कपटी मीठी गला, तुसरा भोला सभाऽ ।। ५४

चतर चलाक बडी रामचंदरे री आमा, कौम तेसै कौढी लैउ दाऊजेहा लाइए ।
भेजी धीना भरत ता राजे माउलै री धीरै, हुआ सभ कौम ऐ कशल्या री सलाहिऐ ।
होरा सिभ सौहुकणी शोभली सी मूं सेंघै, अकड़ा सा राजे पीछे भरते री माई ऐ ।
जौल़नी सा तुसरी कशल्या बै माई होरो, प्रगट नी केरदी कपट चतराइए ।। ५५
तुसा पांधे राजे रा पियार बडा भलीदानी, सौकणी रा होंदा आऊ अंढा है सभाउ सा ।
केरु तेसै घोल़ा मोल़ा राजा काबू केरु, रामचंदरे रै तिलका बै लगन गणाऊ सा ।
गदी राम चंदरा बै गल खान दानी, ठीक लागी साभी लोका बै ता मूं बी बडा चाऊ सा ।
डौर लागी मूं बै आगै एंदी गला सोठदेआ, लोडी भगवान केरे फौल़ तेसै पाऊ सा ।। ५६

दोहा:- करोड़ा मेंभर गौंठिऐ, ताणु कपटी रा जाल ।
शौउ कथ शौकणि री दसी, होए भीक बुआल़ ।। ५७

होण हार अंढी थी ता धीजा आउ राणी बै बी, पुछी सौ सगंधी शौऊ देयी तबै राणीऐ ।
हाजी बी नी प्याड़ी अबै पुछणा की रौहु तुसा, घाटा बाधा पशु बी सी जाणा पछियाणिऐ ।
हुआ औधा म्हीना ईना सज धज केरदेआ: तुसा लागा पता औज सौवी मूं न जाणिऐ ।
खांदी लांदी लागीरी सा तुसारै है राजा मौंभै, सची गला दसणे न दोष की सा राणिऐ ५८
गौंठी गांठी हूणनू जै भूठी गला तूसा सेंघै, देला भगवान मूं नै डौंडएसा गलै रा ।
होई जाला रामा बै जै काल राज तिलक ता, बिपता रा बेजा तौबै बाहआ नी भलै रा ।
बणी जाणा तंढी तुसा जढी म्हौखी दुधै री सी रेख देयै हूणा सा ऐ बोल मेरै बलैरा ।
बेटै सुध केरली तू नौकरी जै इनरी ता, रौही एई धौगा सा पुआऊ तेरै भलै रा ।। ५६

बिनता दखेरी कद्रुऐ, तुसा कशल्या दखा लि ।
लछमण सघी केरिऐ, भरता केंदी पालि ।। ६०

गला शूणी करड़ी ता केकेई डौरी गई, नोल़ी किछ हूणी सीधी शूकी डौरै लाईए ।
देही पौऐ पौरसू ता कौभी केले पौचा साही, डाही डौरै तेसै जिभ दौंदान दबाइऐ ।
भोड़ा कथा कपटै री तेसौ शणियाई जौस गलै सभ्र केरै राणी मन समभाइऐ ।
भाग आऐ खोटै लागी कपटण प्यारी नीछी रौजी हंसणी रै धोखै बगली सराहिऐ ।। ६१

मंथरा तू शुग तेरी सिन गला सची लांगी, मेरी सीधी हौखी रोज रौहासा फड़कदी।
राती रोज होश्रा सी धियाड़ बुरे सुपनै ता तौ सैंधौ ढूणी नोली
केरनू कीमांदिऐ समाऊ गोउ सीधा मेरा, दैहणी ता बांवीं गला मूंब नी रड़कदी।

आपून सार नी श्रोज तइं, बुरा कौसिरा केरू।
कुणि लायौ मूंबौ भला, दुःख एतरा पेरू॥ ६३

रौही जानू पेउके उंबर भर बण्ही जाथौ, केरदी नी जींदे जीवै सौहुकणी री चाकरी।
वैरी रैं धीन जीणा जौस देऐ भगवान, मौरना सा भला तेई जीणे न ता मथरी।
श्रंढी गला धीनगी री ढूणी बोहू राणिऐ ता इस्तरी चलितर चलांदी लागी कुबड़ी।
श्रंढा कंढा बोलाली केरिऐ मन धाउड़ा जी दिन दूणा बधौ तेरा सुख ता सुहागरी। ६४

जुणिऐ नौ सोठी होली बरयाई तुसरी ता मिलू लोड़ी ते ही बौ सा फौल एई पापौरा।
जरी नोरे पैंकर ऐ शूगू बभियाणिएं मैं, तीज सुख नौठी नाधिश्रान, रौहू श्रापौरा।
पुत्रै भुगी लोक तीनै रेख पायै बोलू सच, मिली जाणा भरता बै श्रवधैरा राज सा।
सेवा लायौ तुसरीऐ वशान सी महाराज, केरनी ता दसी देनू ऐतौ राजै लाज सा॥ ६५

लाडे बेटै छौड़नूं, खूहै देनू छाल।
मेरी तौयें बोलदी, किबौ नु केरनू भाल॥ ६६

केरी मगरूर केकेई कुबड़िऐ तबै काटे री मन पाथरा न पलोइए।
एंढो त्रिया रागी रे री भानुई थीं तंढै जंढै ठगीदा बौलीरा पशु हौरैं घाहा हेरिऐ।
शुगी गल भीडी पर श्रंता पांधै खोटी जुण माहुरा थी घोलू ऊजै म्हौ खरतड़ाइऐ।
तबै बोनू श्राद होली तुमाबौकी न होली, डाहीरीसा एक गल तुसै राणियाइऐ। ६७

दूई बरदान राजै श्रागैंसी श्रमानत जे मौंगी लैली तीना श्रौज छाती केरी ठंढी तू।
भरता बौ राज बनवास रामचंद्रा बौ मौंगिए ता सौकणीरी चोड़ चांडा श्रंढी तू।
राजा जबौ केरला सगंध रामचंदरै री तबै मौंगी नई ता नी लोड़ी राजा बदलै।
छुटी रात श्रौजकी ता होई जाणा बड़ा द्रोह, तुसै मन लायौ मेरीं ईना गला मनलै॥ ६८

पापणिऐ दा - लाइऐ बोलु कोप घोर जा ।
कौम सम्हालिऐ केरैई, भेंट पट मत मनी जा ॥ ६६

जानी न पियारी बुझी राणिऐ सौ कुबड़ीता, बार-बार लागी तेसा अकली सराहंदी ।
तौ साही आपणा नी दुनिया न कोई मेरा बाल धीना मू ं बौ लागी पाणीन थी बौहंदी ॥
एई ढबें काल मेरे होली पूरी मनेरी ता तौ बे भाऊ साहीईना होखी मौंझै ढाहंदीं ।
बोहू तहैं कुबड़ी बें आदरता मान देयौ, केकई नौठी कोप भवना न रौहंदी ॥ ७०

जीमी बणी केकई ता तेसरी कबुद्धि वरसात वणी मंथरा बेजा विपतारा बाहुआ ।
कपटै रा पाणी पौऊ जौमु बेजा सरभर, दुई बौर पौच लागै फौंल दुख आउआ ॥
केरिऐ समान कोप भवना न जाई सुती केरदी थी राज सौ कुमतिऐ गुआउआ ।
नगरा ता बेढें मौझै धूम-धाम बड़ी भारी, एई घौलै मोलै रानी थोघ कोइ लाउआ ॥७१

नर नारी सारै खुशी, सजदै मंगल चार ।
तुरदै कोई निकलदे, बड़ी भीड़ दरबार ॥७२

यार बचपणे रे ते खुशी खुशी मनै सिभ पौंज पौंज दस दस रामा आगे एजदै ।
राम जी रा प्रेम पछियाणिऐ सराहिआ सी, मीठी मीठी गला सेघैं हाल चाल पुछदै ॥
राम जी री केरदैं सराहुति ते आपू मौंझै, पूछी पाछी राम जी बौ घौरा धीरे फिरदै ।
कुण रघुबीरा साही होला एसा दुनिया न नीउंते सभाउऐ पियारा बौ नभेरेदे ! ७३

करमै रै फौलै आसैं जौस जौस जूनी जालै एक गल भगवान आसा बौ दियादै ।
असै लोड़ी सेउक ता सियापति मालकऐ, इना मतै फीरी तेयों आसाबे नभाई दै ॥
अद्वी मन इछया थी नगरा न सभीरी ता केकई राणी होरा मनोमन दाही दै ।
नीच मतै सेघे नई अकल ठकाणे रौंदी पौड़िऐ कसंगती न कुणनी मटांई दै ॥ ७४

राजा खुशिऐ सौभकैं, केकइ आगे आए ।
देह धारिऐ भूरि बुझ, झीका आगे जाऐ ॥ ७५

शूणू कोप भवने रा नां राजा ठिठकुआ, आगै नीछी गौंई पौड़ी मना मौंझै डौरीऐ ।
बला लायै जौसरै सा इंदर न डौरा रौहा, जीया होर राजै सी जौसरा रेवा हेरिऐ ।
सौहै राजा शुकी गेंउ बेटड़ी री भीका शूणी, भाला करामात बड़याई कामदेवं री ऐ
मारै कामदेवें ते है फुला अलं बाणे जुण, मारीदै नी बज्र शूल खड़ग तलवारीऐ ।। ७६

डौरदेआ तबै राजा नौठा प्यारी राणी आगै, भालू हाल चाल दुख हुआ बडाभारी थी ।
धौरनी थी लेटी री ता कपड़े पराणे लायैं भांतो - भांते भांडे डाहै अंगारै तुआरी थी ।
कंढा एसै मूरखै कशगगे रा कौम केरू, रौंडीणेरी धीनी जंढ आणी होणहारी थी ।
कौस गले रुशी रौही दस मेरी प्राण जानी, नेड़ जायै ढूणी राजै गल स्रोठी प्यारी थी । ७७

छंद :- कारणे कुणिऐ भिकुऐ राणी जी, छुंघढे लागै ता हौथ ड़काऊ ।
बुझणा भिकुई नागणी कालीऐ, भिक घरौछिऐ हेरना लाऊ ।
भाभा थी दूई ते बणी थी जीभा, दौंद ते बौर निहालदै दाऊ ।
तुलसी होणी रै चक रै राजा कामै रा चकमा लेखे न पाऊ ।। ७८

दोहा :- बांकी हौखणी कंठणी, घड़ि-घड़ि बोलै राऽ ।
कोपैरा गज गामनी, कारण मूं बै शणाऽ । ७९

बोल प्यारी कुणी जणे केरू तेरा बुरा दुई मुंड कौसरै ता जम कौस चाहा नेणा सा ।
बोल कौस मंगते बणाई देनू राजा आज बोल कौस राजें बैं नकाला आज देणा सा ।
तेरै बैरी देवते बी मारी हाऊं सकदा मकोड़े साही, लोक छूंड द्याउणा नगौणा सा ।
हांउ तेरै मुखा चंद्रामांए रा चकोर सा सभावा एई मेरे तूता सही तहैं जाणा सा ।। ८०

मेरे ता पराण परूआर बेटै सरबस, परजा समेत तेरें बशासी पियारिए ।
केरा सा सगंध हाऊं रालचंद्र बेटे री जें केरिऐ कपट तौबैं ढूणा होला आहिए ।
हौसिऐ तू मौंग मूं न मन चाही गला केर बांकी कायापांधै गहणे कपड़े शंगारिऐ ।
वौगत कवौगत फियाड़िऐ बचार केर, शेट अबै कोपा आलें कपड़ें तुआरिऐ ।। ८१

दोहा:— शुणि सगंध खुशिऐ उठी, गहणे लांदि गुग्रार ।
हिरना भालिऐ हेड़नी, केरदी फाहि तियार ॥ ८२

फीरी बोलू राजै तेसा भली माणहू जाणदेआ मीठी मीठी गला बाता हूणिए पियारै री
केरी धीनी मनैरी मराद तेरी माँदिऐ मैं, घौर-घौर घूम माल नगरै री सारै री ।
सजी दै तू बांकीऐ शंगार अबै शुभाग्रालै केरी देणी राजगदी रामजी री दोतोऐ ।
शूणदेआ विदकी नरौठी राणी केकई जंढै विदका सी पौके बाल तोडा कोतीऐ ॥ ८३

अंढी बडी दाह तेसै हौसिऐ गभेई जंढै चोरै री जनानी कोई प्रगटी नीरों दी सा।
राजैंनी कियाड़ी चतराई कपटणि जुण क्रोड़ कपटी रै गुरू री पढ़ाई होदी सा।
राजनीति चतर थी राजा चाहो छूढा पर बेटड़ी चलितर समुदरा न गहरा ।
नकली पियार दरशायै, तबै, बोलू तेसौ हौसदै मरोकदेआ हौखी होर चेहरा ॥ ८४

दोहा:— मौंग मौंग ता बोलदे, देण लैंण नी बास ।
दुई वर देणे केरिरै, मिलणे री नी आश ॥ ८५

कियाड़ी जेही राजें तबै हौसदेआ बोलू तौबै सीभी न पियारी लागा मान ता बड़ाई सा ।
डाहीरी अमानत नी मौंगी कि बै ओजा तैये भलक्कड़ सभाउ मैं बी आद वसराई सा ।
भूठ मूठ दोष मत देआ तुसै आसा बै ता चार मौंगी लैआ तुसै दुई री की लाई सा ।
प्राण चले जान पर वचन नी जाणे दें दै म्हारे रघुकुलै री ऐ रीत चली आई सा ॥ ८६

बोहू सारै पाप बी नी एकी भूठा जे तरै, नी रतियां करोड़ा लायै परबत बणादा ।
सीभी पुन्नाधरमे रा मूल सचियाई, सभ वेद ता पुराण मनु महाराज मनदा ।
तेता पांधै रामे री सगंध रौही खाउ इऐ, मेरे पुना प्यारै री सा राम हद आखिरी ।
केरो गल पक्की बोलू हौसदै कबुधणिऐ, बाजै री कमति रै जैं खोल्ही टोपी होखी री । ८७

रामचंद्र जी रै जनम लेणे रा एक कारण—१३

राजा प्रताप भानू री कथा, रामायणे रै बालकांड न रामायणे (तुलसी दास जी री) रैं दोहे ता मैं कुल्लू री बोली न दोहे है बणाइऐ लिखे पर चपाई रा बेउरा कुलुई चपाई

लिखै पर चपाई रा बेउरा कुलुई चपाई न नीछा ओपड़ी, तबै मैं बोहू जैहैया २१ आखरै रा दंडक छंद छौंहू, उंई नं तुलसी दास जी रे एकी एकी शब्दे रा पूरा-पूरा मतलब कुलुई बोली न भौरू दा सा, एतैरा पता रामायणा सैंघै मलान केरिए लागी सका सा। सैंघै कवितान तोल ता गिणती काईम डाहणे री तैयें शब्द आगे पिछे केरने पौड़ा सी दोहै दाहै न ता मात्रा री गिणती तैयें कोहरे शब्द दोहरे ता दोहरे रे कोहरे केरने पौड़ा सी तबै पौढ़ने ता फ्याड़ने न जरा कष्टी होआ सा, छंदा कविता रा काईदा होआ सा जे तिनरा तोल भाख एजी जाऐ तबै पै पूरा मजा एजा सा। अंढा है स्हाव पिछली कविता रा बूझणा ऐ दूहै प्रसंग धाउड़े सी तूई री तैयें हाऊ माफी चाहा सा।

बाल कांड १५२ दोहे न आगै (रमायण गीता प्रेस)

शुणा मुनि कथा सा पराणी ता पवितर जे, पारबती आगे शिव शंकरे शणाई थी।
प्रसिद्ध सारी दुनिया न देश एक केकय सत्यकेतु राजे तौखे राजगदी पाई थी।
बड़ा जाणकार धरमातमा थी राजा परताप तेज न्याउ ता नसाफ वडियाई थी।
दूई बेटे हुए तेई राजें रे थी जाणकार, होनहार जोधै वीर बडे दूहै भाई थी॥ १

जेठा बेटा जुण राज पाणू आला टिक्का जे थी तेईरा थीनां "परताप भानु" डाहीरा।
कोन्हा "अरिमरदन" कौउर थी जुण सौ बी, डटणिया जुवान नथोघा जोरी बांही रा।
कोई छल कपट बरोध तीना आथी नी तो, आपू न पियार भूरी बड़ा दूही भाई रा।
धीना राज राजे 'परताप भानु' टिके नैता आपू बौणा धूणा तप केरने वौ लाईरा॥ २

दोहा :- प्रताप भानु राजा बणू, देशा फिरी दुहाई।
धरमै परजा पालदा, शेटू पाप मकाई॥ ३

तंढा है वजीर 'धर्मरुचि जंढा शुकर थी राजे री भलाई आला चतर सजान थी।
आपू परतापी सैंघै जोधा रण धीर थी ता मंतरी सियाणा थी ता भाई बलवान थी।
चतुरंग फौउजा नगोणी आपू आगे थी ता भादर लड़ाके वीर फौउजी जुआन थी।
भाली नवे फौउजा ता राजा परसन्न हुआ खुशी रे दमामे बाजें उडदे नशाण थी॥ ४

जीतणे री तैयें थी बणाई फौज-फा:ण तबै हेरिऐ घियाड़ा चढ़ू डंका बजाईऐ।
जगा-जगा बौता न लड़ाई हुई बोहू भारी बोहू सारे राजे जीते जबर लड़ाईऐ।

सौत द्वीप जीतं बोर बबरिऐ काबू केरे, छोहे केरं जीतिऐ ते दंड भरुआईऐ ।
एक थी प्रताप भानु चमकीरा तेई समे सारी दुनिया न जश आपणा फलाईऐ । ५

दोहा :— जोरें दुनिया जीतिऐ, नगरा केरु प्रवेश ।
फौल् आई है वर्गेरे, पांदा रोहु नरेश ॥३

परतापा लायो परताप भानु राजे रैं, ऐ कामधेनु साही हुई पृथवी सुहाउणी ।
कोई दुख रोहू नईं परजा न सुख बोसू, धर्मी हुऐ मर्द सती बेटड़ी सुहाउणी ।
भक्त भगवाने रा वजीर धर्म रुचि सुणी राजेरैं भलैबे नितनौवी नीत आणनी ।
गुरु देउ ब्राह्मण ना संत होर पितरेरी केरा रोज राजा भी सभी री मन भाउणी ॥ ७

शास्तरान जे नाम धर्म लिखे राजेआरं तीना सीभी माना सेंवै केरिऐ सुख मना थी ।
रोज रोज केरा भी सो दान भांति भांति रैं ता वेद ता पुराणा रोज शुणा थी ता गुणा थी ।
बोहू सारं बाउड़ी तलाई खूहे जगा जगा फूलेंरं बगीचों बाग बांके रोज बणा थी ।
ब्राह्मणे रै घोर देऊ मंदर थी बांके बांको तीरथ बचितर बणाए कई गुणा थी । ८

दोहा :— जो पुराण वेदे दसे केरें ते सभ जाग ।
झार झार बारी सभै, केरें ते बे लाग ॥ ९

फौलेरी नी भाभ कोई राजेरै थी मना मोंझै अंढा राजा बुधिमान चतर सजान थी ।
धरम करम मन वाणी सोंघे केरें प्रभु अरपण अंढा हुआ राजा ज्ञान वान थी ।
एकी वेरै बांके जेहे घोड़े पांधे चढ़िए सो, हेड़े, खेल्हीणो रा सारा सजिए समान थी ।
विंध्याचल परबता नोंढा घोणे बोणा मोंझै बोहू सारं मिरगेरी कोढी शेटी जान थी ॥ १०

भालु राजे सूर एक फिरदा थी बोणा जंढा राहू ग्रह सोभुआ चदर मावे ग्रसिए ।
बड़ा गोउ चंदर सो नीछा खाखी ओपड़ीऐ नोलू झीकैं गुची रोहू होऐ गोला फसिऐ ।
अंढा सो डराउणा थी सूर भारी कायाता डराउणी नुहार लागी ढोर दोंदा देखिऐ ।
छेढ़ शूणी घोड़े तबं लागा घुर धुरदा हेरान होय भालदा सो कोना खड़े चकिए ॥ ११

दोहा :— नीलें जोते री चूल जां भालू मोटा सूर ।
राजे रै रोकुआ नंई, घोड़े मारी टूर ॥ १२

जबो छेढ़ शूणी सूरं घोड़ें री जोनेड़ एंदी भारी तेयो ठोर जंढी बागरी री चालिए
झट पट राजे बी चढ़ाऊ तीर धनवा न वेशी गेऊ थोरनी सो सूर तीर भालिए

ताक लायें मारै केरें बाण राजे केतरै बचाऐ केरी जान सूरै चाल वाज छलिए ।
गोभीदा ता प्रगदीदा रोहू सूर भगदा सौ भीकै लायै रौहू राजा पीछै पीछै चौलिऐ ।।१३
बडी दूर निकता सौ सूर घोणे जंगलान जौखै हाथी घोड़े नी थी कदी तूरी सकदै ।
केल्हा रौहू राजा बौणा जूनीविथा बडी भारी तबैं बी नी राजा बौत राजा हेड़ै थी छौडदा
सूरै जबैं भालू राजा जिग़रै हिग्राउ ग्राला, तूरु झूघी जुघली द ठौरै ठोर भगदा ।
जबौ हेड़ राजें ग्रागे बधणे बै बौत नई, भूली गैंउ बौंत पछताइऐ थी हटदा ।। १४

दोहा :— थकिऐ भुखुग्रा शोखुग्रा, राजा घोड़ै सुध।
नौई सौरा तोपदा, पाणी बाभि वसुधा ।। १५

भटकदै भालू एक ग्राशरम बौणा मौंभै रौहूंदा थी राजा एक ऋषि ग्रालै भेषा न ।
जौ सरा थी देश परताप भाने जीतू होंदा छौडीऐ लड़ाई फौज भगीरा थो देशा न ।
चमकदै भाग परताप भानुरै फियाड़े ग्रापणे ता डुबदै फियाड़े चौउ दिशा न ।
नौ ठा नी ती घौरा बै सौ हारु होंदा राजा लोजै हेरुग्रा रियासती रै कौसी बी मनुषान ।१६
भीक जीकी मना मौंभ डेठी बणू रौहू बौणा कुटिया बणाइऐ तपस्सी साही बणिऐ।
तेई ग्रागे नौठा राजा तेयै पछियाणी लैऊ कपटी तपस्सी राजैं बोलू पछियाणिऐ।
भूखै शोखैं राजे तबं नोली पछियाण केरी जटा जूटा ग्रालै तेई ऋषि मुनि जाणिऐ।
ग्रोथा घौड़ै पांधे न ता टेकी धीना मौथा सैंघै केरिऐ चलाकी नांद स्सू नई जाणिऐ ।। १७

दोहा :— राजा शोखा जाणिऐ धीना सौर रिहाई ।
पाणी पीऊ घोड़ै सुध दुहिऐ शांति पाई ।। १८

उतरी थकाउट ता राम बुभु राजे तबैं कुटिया बै ग्रापणी सौ साधु लेई गौऊ थी।
ग्रोड्डू थियाड़ा भालू रौहणे बैं बोलू मीठी मीठी गलै डेंढिऐ सौ राजा मोही लैऊ थी।
कुण सौ जी तुसैं कीबैं भटकदै बौणा केल्है ग्रांखौ सी भुग्रा न कीध जानी पांधै खेलदैं।
लछण सी तुसारै ता जंढे चक्रवर्ती ग्रालौ भावदेग्रा मना न वचार लागे एज दै ।१९
राजा सा प्रताप भानु शुणात महातमा जी बडा है प्रतापी हांऊं तेईरा वजीर सा ।
खेल्हीदा थी हेड़ा पर बौत मैं बिसरि पाई तुसरें चरणा पुजू मेरी तकदिर सा।
दरशणा तुसरें नियमत सो ग्रासा बौ ता होणहार भली होणी कोई गंभीर सा।
तबौ बोलू साधुऐ निहारुग्रा बौगत ग्रबौ सतर योजन तेरा घौर दर वीर सा ।। २०

दोहा ;— रात निहारी घौर बणा रहना नी महाराज ।
जाइत रात विहाइऐ, राती रोहा ग्रोज ।। २१

दोहा :— रात निहारी घोर बण, रस्ता नी महाराज ।
जाइत रात विहाइऐ, राती रौहा औज ॥ २१
होणी जंढी हौग्गा सा, तंढा मिलदा मेल ।
आपु नि कौछे एजदा, तेई नेंदा नेड़ ॥ २२

साधु जी र हुकमा बै मनिऐ प्रताप भानु राजा बेशी गैऊ घौड़ै बूट सब बौन्हीऐ ।
तबै केरी साधु री सराहुती बी बडी भारी आपणै बी भागै री चरण बौंदी-बौंदीऐ ।
सौंघै ढूणी मीठी गला मी.ाऐ जभानीऐ जै केरी मैं शरेड़ा माई बापू तुसा मनिऐ ।
मूं बै महाराज बुझा बेटा सौंघै चाकर बी नां जा: दस्सीदेआ आपणी जभानिऐ ॥ २३
राजे पछियाणू नी ता तेयै पछियाणी लैऊ, भोला भाला साधु चतर चलाक थी ।
एक ता थी वैरी दूजा छत्री सौबी राजा तेई कौढणा थी कौम छल कपटै ऐ ताक थी ।
सोठी-सोठी राज सुख रौहा थी सौ जौलदा आबै साही धुखै केरी छाती न कड़ाक थी ।
सीधी गला जबै शूणी तेयै राजै री ता अंढा बणू छौड्डू जंढा वैर खतरनाक थी ॥ २४

दोहा :— कपट भौरि मीठी गला, केरी तेयै अजीव ।
नां मेरा डैंठी अबै, धौरा बाभि गरीब ॥ २५

बोलू राजै तुसा साही ज्ञानें रै भढार पर गरब घमंड डाहै जुणिऐ नभेरिऐ ।
सीभी तहैं चतर ता जाणकार होंदेआ वी माड़ै भेषै रौहीरै सी आपू बै गभेरिऐ ।
तंढै ते नमूलै लोका हरि बैं पियारै हौंदै बोलू सत लोकै अंढा वेदा बै बचारिऐ ।
तूसा साही मौंगता गरीब ता न घौरा जुण, हौआ सा भरम शिव ब्रह्मा ब बौ भलिऐ ॥२६
तूसै जुण कोई होलौ मौथा टेकू चरणा न केरी देआ दया तुसै मूं पांधै मालका ।
सीभी तहैं राजै बौ बजेरिऐ ता भूरदेआ बोलू राजा औखे हाऊ बौसू बोहू बालका । २७

दोहा :— हाजी नी मिलू कोई, ना मैं आपू शणाई ।
मशहूरी बौणा साही, तणा बौ देंदी जलाई ॥ २८
भेषा न चतर नि भुलदै, ठगिया सी अणजाण ।
बांकी बोलि नुहारिऐ, सपं मोरै रा खाण । २९

एसो गलें रौहा सा संसारा मौंझै गुपता ता भगवाना पोरै नई मतलब कोईरा ।
जाणै सोहै सिभ किछ दसे बाभी, बोला तबै लोका पतियाणे रा की मतलब पौईरा ।

तुसै चौखे चतरसी मेरे बडे प्यारे बसुग्रास ता पियार तुसां मूं पाधे होईरा ।
ग्रबै राजा हांऊ तुसा कौढी देनू फेटै तगे बडा भारी पाप दोष होणा मूं बौ तौईं रा ३० ॥
जीऊं जीऊं डेठीऐ दुग्रासी ग्राली गला केरी तींऊ तींऊ राजै बै बवाह लागा वधदा ।
जबै भालू काबू हुग्रा मनै कौमै गलै बातै लागा ठग मी ी गलै राजै होरा ठगदा ।
नां मेरा 'एक तन' शुणा तुसै महाराज, राजा बडी धीनगीऐ लागा तबै पुछदा ३१ ॥

:— जदी बणू संसार थी, तदी जौमु थी हाऊं ।
दूजी घेरै जौमु नी, तबै एक तनु नांऊ ३२ ॥

मत होऐ शुन्न बेटा एसै गलै मना मौंझै बडा सारी चीजा मौंझै दुनिया न तप सा ।
तपो बला सैंधै ब्रह्मा रचदा संसारा बै ता तपो बला सैंधै केरा विशनु सारकशा ।
केरा तपो बला सैंधै शिवजी सा नाश ग्रंदा बडा है वचित्र तपो बला मौंझै जश सा ।
खरी गौमी राजै बौ ऐ गला जुणा तेयै हूणी ग्रापणी पराणी जै शणाई तेयै कथ सा ३३ ॥
कर -मेरी. धर -मेरी, कथा वरशोहा साही केरी बोहू गला तेयै धरम गियानेरी ।
कथां लाई बडी मीठी लूण ता मसाले लायं दुनिया बैं रचणे ता धाचणे मकाणेरि ।
ईना गला शुणदेग्रा हुग्रा राजा वशान ता केरी तेयै गल नां ग्रापणा दर्शाणेरी ।
बोलू तबै साधुऐ जै जाणा हाऊं साहै तौबै लागी गल खरी मूं बैं नां गभियःणेरी ३४ ॥

दोहा: — शुणा नीति राजा तुसै, सौउं तै नीं लैंदे नां ।
मूं बौ तेरी भूरि सा, चतराई मनी तां ३५ ॥

राजा तेरा नां सा प्रताप भानु पता मूं बौ सत्यकेतु नां तेरै बापू जी रा पता सा ।
गुरु जी री किरपान पता सीभी गलैरा सा चींधिऐ नी दसू तैबौ ग्रापणा ऐ मता सा ।
भाली लौई राजा ग्रासै तेरी सीधयाई होर प्रीत परतीत होर नीति निपुणता सा ।
ग्रबौ तुसै पूछ ता शणानू कथ ग्रापणी बौ ग्रासरै मनान ग्राई तुसरी ममता सा ३६ ॥
हुग्रा परसन्न मेरे मनानी भरम रौहू भाभा जुणा मनान सी नेग्रा राजा मौंगिऐ ।
शूणी बांकी गला तबौ हुग्रा राजा खुशी केरी बोहू भाँति ग्ररज साधुरी जौंधा बोंदीऐ ।
चार है पदारथ सी ग्राऐ मेरैं हौथा पांधै दयारै समुद्र तेरे दरशण कैरिऐ ।
बभिया जी तबौ बी प्रसन्न हुऐ भालऐता मोंगी लेनू बौर खुशी मालका बौ हेरिऐ ३७ ॥

दोहा:— बुढ़िणा मौरना दाहिणा, जुधा नि लोड़ीहार ।
कल्प शौऊ ग्राधीन हो, विणिहु बैरी संसार ३८ ॥

(तगै साधुऐ बोलू)

जा राजा थीना बौर 'ग्रंढा होईं जाला' पर एक गल करड़ी सा तेसा डाही शूणिऐ
बाम्हणैं री जातीन सुग्राऐ सारी दुनिया बौ बोल देनू पाई तेरे चरणा न ग्राणिऐ।
तप बल तीना ग्रागै तगै बड़ा ब्राह्मण सा कोप होऐ तेईरा बचाणा तबैं कूणिए।
जबौ ईना बाम्हणा बौ केरी लौलैं काबू तुसौ विशनु बरह्म शिव बशा न सी एणिए ३६ ॥

चौलदा नौ ब्राह्मणे री जाती सैंघै जीर बल सच्च कूणी देनू हांऊ दूही बांही चैकीऐ।
लागला नू बाहम्णे रा तुसा बौ शराप जैं ता, होणा नईं नाश तेरा डाहू ग्रासौ ठाकीऐ।
खुशी हुग्रा राजा जबौ गला म्हातमें री शूणी पूछ्छ महाराज मेरा नाश कदी होणा सा।
तेरी किरपा न ग्रबै बाबा महाराज मूं बौ ग्रागे बौ बी तुसा है कल्याण है कमौणा सा ४० ॥

जवाहर जोत –१४

दोहा :— नोखा माण्हू थो जवाहर लाल, एई जुगैं रा देउ।
सभी देशौ रा कौकड़ी कालजा चट थोसिऐ नैऊ ॥

कंढा शोभला भीतरै बाहरै खाख हौसणु ग्राली।
भौर बौग तौ ग्राइ ड़ं कौऐ न तौबौ मौरन ताली १ ॥
लागी कौसरो नजरा तौवैं कौस खाखी री गाली।
बौणा रुणे तौबौ गोरु गुग्रालै रुणे छेता न हाली २ ॥
जींदैं जीगैं तैं देशा छुड़ाणे बौ बडी विपता घाली।
जानी नौशिया छार बी ग्रापणी सारै देशा न रोली ३ ॥
तौ लायौ थी नेहरु चाचा सारै देशा न ह्याली।
बौत भालने बौ सारै संसारा बैं डाही जोत तैं बाली ४ ॥
वे बश, हुई इंदरा बिंदरा चूटी ढौकणू डाली।
सती हुई ड़ं तेरे बजोगा न तेरी प्यारी मनाली ५ ॥

जुगनु जीजु–१५

जुगनु जीजु पराचदैं होरा
मारदे कुणा निहारखी राती न ग्रोरे न पौरे बौ ठोरा।

ठ्ठरद कीजी गै भाऊं भियाऊं कंढा ऐ श्रोरा ता पोरा १ ॥
सरगा पांधै सी बादल ताणुऐ चौउ कनारै इपट्ट ।
चौरनी आपणा श्राप नी भालीदा कौऐ न भालीणे होरा २ ॥
निहारा पौईरा दबका अंढा बाहैं नी कोई बी एंदा ।
खडी कियाड़िऐ हौंढा थी जुणा ते गोभुई बेशी रैं घौरा ३ ॥
कंढ मसौलिऐ गाश बियाने न एक बरीबर प्याशा ।
विजली लसकी गोभुऐ धिख ता ग्रूडू न जतनी डौरा ४ ॥
उडं बियाने की सरगा तारै ऐ तौपदैं होलौ ठकाणे ।
बांगला दे शौरे लोकौ रा जंढा जै आसरै दे शान जोरा ५ ॥
अंढा सा बुझिया गौहरी लोकै री आई जणितर बाल्ह ।
होमा बै श्रोंथी कीं नाउरी अंबका भौखैं मसौली शनोरा ६ ॥
लागी नृमुंडे री होली की द्याली आऐ ऐ गढिऐ हौलैं ।
चुलकै टैडैं की बिजडी भेड़ा भालिऐ बाघा की चोरा ७ ॥
हाऊं निहारै न इंदर धनख तेई परांदै की होलै ।
सीभी रै हौथा न शौली पियाशा, सीभीए मारदं ठोरा ८ ॥

फौजी वीर—१६

राजी रौहा भारतै रे जोधेओ जुआनो औज,
गल सा जभाने पां धै तुसरी जमाने री ।
सा बाशा यारो तुसैं आन डाही भारतै री,
नाश केरु वैरीरा ता ल्हाशा बेईमाने री ।
सोरै भाई साही हुई एक जान जबै सीभी,
पारसी ईसाई सिख हिन्दू मुसरमाणे री ।
शीऊं केरी शेटं पेची नीऊ नाम फेटैं जुणा,
आऐ सीवा सेटैं जबै गौरी हिन्दुस्ताने री १ ॥
भारती जुआने थी समुंदारा न सेउ लाऊ,
कथा नल नील जाम बंत हनुमाने री ।

चन्द्रगुप्त पोरस अशोक विक्रमेरी गला,
केरी ताजी ओज पृथी राजै री चुहाने री।
बड़ै बड़ै जोधौ वीरै देशा पीछै जानी थीनी,
शिवाजी प्रताप हुए ढाल हिंदुआने री।
देशै री आजादी पीछै गोली खाई लागै फाही,
घाली लोकै कैइदी सा कथा बलिदाने री २ ॥

चार गेरै हमलौ कराऐ ईनी बैरी लोकै,
कसर नी डाही तोफा तुबका समाने री।
चेका चोड़ू चीने रा मरीकै रा मरोकू नाक,
लका लकी बेठी कुरदाने री ईराने री।
मारै सेबर मिराज नैटा सैघै तूसै तंढे जंढे,
चोड़ू पांधौ बाज हुई जंग आसमाने री।
सरगा समुदरा न जोता न ता बंदरा न,
बैइरी जुआन भूने भासी खीला धाने री ३ ॥
धन धन जीउ ता हियाउ यारो जोधौ वीरो,
जींदै जीबै जान केरी जौंउ रै नजरा ने री।
शाणुएं जरींवा पाधी फरकदे हीवां पांधौ,
मुलख री सीवां बांधी डौर नी बगाने री।
जोता गोहरै रा शोला पाला गाश पाणी होड़ नाला'
घामे रा धुआला चाहो लू रेगिस्ताने री।
सीभी जगा एक सार औठ पौहर खबरदार,
रौहू दूर पार नई खबर जमाने री ४ ॥
शेटै पंलग रजाई ढौकै ता मोरचौ खाई,
तूसै जानी री नी डाही भौंख आपणे बगाने री।
भारतौ रै बेटै तूसै जबर कटेट यार,
हा:—केरी बेठै डाही शान खान दाने री।
बणू देश बांगला सौ छूटा ईना पछमी न,

य ह्मा ता अयूब खांदे हवा जेलखाने री ।
लोहू रा जा होंदा टीपू कवि रा नी हाजी छीपू,
चे, हुई तेतरे बेवश पाकिस्ताने री ५ ॥

माण्हू री जात–१६

माण्हू जे म ण्हू री अकल केरान, देवा न बडी सा माण्हू री जात ।
धरमा धनेरी नसेली जाती री चाडा सा चींवकी उलका पात ।
दया बी केरा न जीवा बौ भूरान देवा न बडी थी माण्हू री जात

एक संसार ता देश नगौणे देशा देशान लाके सी बोहू ।
लाके न जिले तसीला पचाश्ती ग्राए रा लेखा हिसाब नी रौहू ।
ग्रां न घोर ना घौरा ता टबर टबरा प्रति सी पारटी शौऊ ।

पारटी पारटी भौटी दी खांइदी सीभी रे मनान कपट पौउ ।
एकी है काया रे अंग सी सारे की केरनी एकीऐ दूजे री घात ।
दया जौ केरान जीवा बौ भूरान देवान बडी थी माण्हू री जात १ ॥

ऋषिऐ केर थी वरण धार ता माण्हूएं ताणे ले चाल्ही हजारा ।
उथड़े निशदे विसूऐ नापिए जाती रा पाली रा पाउ खलारा ।
लोडी थी सीभी रा धरम एक ता औज सा सीभी रा धरम न्यारा ।
सेरना बूटा न ढौकीदा कौसीरे डालू बौ ढौकिऐ लाइ पकारा ।
एक प्रमेसर मूल सा सीभी रा प्रेम सा तेईरी धरम जात ।
माण्हूएं माण्हू री अकल केरान देवा न बडी सा माण्हू री जात २ ॥
पूरबी पछमी उतरी दखणी एक सांसारे री परजा सारी ।
कोल मंगोल ता आरिऐ द्रावड़ हवशी गोरे सुमुदरा पीरा ।
मिल मजूर मजारे ता मालक घोड़ शुआर ता पिठ बगारी ।
हौथ कमौणिए दस्तकारिऐ जीमी कशाण ता हाट बपारी ।
प्रोहत जमान वकील ता साईल मंतरी बोटर कर्मचारी ।
रंगे रा धने रा कौमे रा फरक एता न पौरें नी गल ना बात ।

एसा जे गलां बे सिभ फियाड़ा न देवा न बडी थी माण्हू री जात ॥ ३

जेतरी दुनिया भालुई कौसीऐ असल सार नी समझी जाणी ।
कीड़ा ता पूजीरा कीसै रा कीसिए, दुनिया दिसदी रौही न शाणी ।
कौसा बै तोपाम सिभ निहारे न टकरा मारदी विदरा काणी ।
आपू सी पोकिया होरा बै पोकदै तबै वी खाया सा दुनियां स्याणी ।
बुध घुआड़दै मना बुहारदै छौडदै दूजे बौ लाणी जै घात ।
ज्ञाने री जोत जगांदै दै जे मना न देवा न बडी सा माण्हू री जात ॥ ४

फेर बगीचे न कौंड री तारा,, मौझै सा कोटी ता बन्द दुआरा ।
टांगुए पड़दै तीरी दुआरी न चौउ कनारे री बुदुई टारा ।
सचै रा भेत पराणा सा कठण बेवश छुकुआ सिभ ससारा ।
ज्ञाने रा कुथलु माण्हू रे मना न सौ है पराला जै केरे बचारा ।
ठगीणा कीजीबै डंडी पखंडी न, प्रेम नी बिकदा हाटी बजारा ।
सचे पियारे री चिलक लागली, आपु भियाणी निहारखी रात
हांदर होखी घुआड़िऐ भालै ता देवा न बडी सा माण्हू री जात ॥ ५

—औउखी - सौउखी—

17

चिखिऐ देआ सी माण्हू बै दोष, ता चिखिऐ घौड़ा सा माण्हू वियाटा
औउखी सौउखी भाग री खेला, पौजणा सौहै जे बाहू रियाटा ।
हौसदै काटे थी सौउख ध्याड़े औउखी आई ता होसदे काटा ॥

खऊ मखीर थी लौमिऐ जीभ विष बी पौउ सा चाखणा तौबै ।
पौड़ा सा कौडें रे झौकड़ा तूरना, फूलै री मौउजा लुटणी जबै ।
फूलै रा डोलरु लाऊ थी नाका न जुजली लागी ता हौसणा अबै ।
एई संसारे री रीत सा अंढी जे धूप ता छाऊं सी आपणे दबै ।

सुखै रै पौहरै केरदै मौउजा दुखै रै कुथलु भौरासी माटा ।
हौसदै काटा सी सुखैं रै घ्याड़ै ग्रौउखी ग्राई ता हौसदै काटा ॥ १

रौहला सदा जे मुस्करांदा ता करड़ी गला बी होणी सखाली ।
जींदेग्रा थकीरा माण्हू रा जीउडू केरला हौसला मारला छाली ।
ग्रापूहै फिरनी पौधरी हौंडीऐ उथड़ी निशटी बौत जै भाली ।
हौसदी खाखीरै भ्याणू बैं भालीऐ रात विहाणी ऐ दुखो री काली ।
हौसी री विजली केरदी प्याशा भौनीऐ दुखैं रै ग्रूड़ू गर्नाटा ।
दुख ता सुख सी भागै री खेला ग्रौउखी ग्राई ता हौसदं काटा ॥ २

उडरै घ्यडै रै पीऊंलै धूपै बैं शोहीऐ नेग्रा सा रात का निहारा ।
हटिऐ एजा सा दौतकै बौगतै पीउंली चिलक बांकी नुहारा ।
कालौ निहारैं रै खौटणा पीछ सौ हिशदी बौती सा तोपदी स्हारा ।
एजणा एसरा बौगत एसा है केरना प्रगटा चार कनारा ।
उडदै ध्याड़ै सा भाड़िया दुनिया रातका चूटा सा दोती सन्नाटा ।
हौसदै काटा सी सुखौ रैं ध्याड़ै, ग्रौउखी ग्राई ता हौसदै काटा ॥ ३

शाधीऐ एंदा नी सुख ता कालैंग्रा धाकीऐ जांदै दुखौ रैं ध्याड़ै ।
खड़ैं नी रौहंदैं एकी है सौउंचा निकली जाऽसी खरै ता माड़ै ।
खौदली निबली रौहा सी बौहंदी, माण्हू जै एतरी गल फियाड़ै ।
जीतीऐ बाल्हिऐ हारिऐ रोऐ नू, हारे नाह्याउ ना नीत बगाड़ै ।
कीजीरी छाँटा सा भादरी बेबश, कीबौ सा होरा बौ रोयौ भणाटा ।
हौसदै काटा सी सौउखो ध्याड़ै, ग्रौउखी ग्राई ता हौसदै काटा ॥ ४

उग्रांसौ रैं कालौ निहारैं न कुणिऐ भालौ ड़ैं निल्हड़ैं सरग तारैं ।
कौलीरा लूंवरु कबौ भणादुग्रा घेरिऐ डाहू जौ कौंडै रं भारैं ।
बादलौ ग्रूड़ू गर्नाटा न पीहू ऐ पीहक ग्रापणी ठाकी नी यारै ।
खार समुदरा साम्हन भालिऐ पीछैं नी हटदैं नौईं रैं धारै ।
हादुग्रा कीबौ ड़ैं ग्रौउखी भालीऐ, जोर जुग्रानी रा पौउ की घाटा ।
हौसदैं काटी थी सुखौ रैं ध्याड़ैं ग्रौउखी ग्राई ता हौसदैं काटा ॥ ५

जौखै सी कौंडे रें झौकड़ कालैया, तौखै पै सजा सा फूल बी शोभे ।
जौखै न झुप निहारें रा दबका जुगनु जीजू सी चमका लोभे ।
जीणे रा मजा नी किछ बी जबैं जै लागें नी पींड न दुखौ रे चोभे ।
सुखौ रा मजा सा बुझिया तदीहै दुखौ जें झसकं लाऐ नभो में ।
मुंढा गझेरदैं एजणा सुखा बी दुखौ री छाऊं न भालैई माता ।
हौसदें काटें थी सुखें रें ध्याडे औउखी आई ता हौसदै काटा ।। ६

सुखौ रा पौहरा धीना थी जुणिऐ माड़े धियाड़ें बी सौहै रिहाऐ ।
जुणिऐ भौरु घड़ोलू न म्हौखर कडुऐ विष बी तेइऐ डाहै ।
बधकी गल नी दुख बी मांदेआ एई संसारैं री रीत है सा ऐ ।
औउखी सौउखी राती धियाड़ी सी, फिरदी घिरदी एंदी सभा है ।
मनणी औउखी देऊ रा बौर ता बुझणा दुख सा सुखौ रा वाटा ।
'बेवश' वणिऐ वेशी नी रौहणा चाहे हो काणा की लंगड़ा लाटा ।
हौसदै काटा थी सुखौ रें ध्याड़े, औउखी आई ता हौसदै जाट ।। ७

—मेरी ढौकणू डालीऐ—

तौ बाझी रौहू मन रात ध्याड़ भटकदा, अबैं ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानीए ।
छूढें पोथी पौतरें ता देउ देवी संत साधु पुगती मताबक मैं सिभ हेरै छानीऐ ।
तौ बाझी रौहू मन सदा है भटकदा, अबैं ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।
झोठी जेही तान जुण विउंशरी न निकती ती ठिमकीऐ शौंधै न गझेई डाड्डी चिड़िऐ ।
डाली जुण रौंडुई थी शौइरै री बागरीऐ, डाही सौबी बासतै शंगारीऐ ता पीढ़िऐ ।
हींठा थी संजीआ जुण रोंद रोंदा दोथ होयै सौंझा बेठा वणिऐ सौ हाकम निहारै रा ।
आऊ जबै जौगत नमूलां भिछया मौंगणीया बणी बेठा शाहूकार चौधरी बजारै रा ।
एक हाऊं अंढा जुण डूबू ध्याड़ थाल्है थाल्है ढगू सरी आपणी है काया ता जुआनीऐ ।
तौ बाझी रौहू मन रात ध्याड़ भभकदा, अबैं ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानीऐ ।। १

केरु जैं बचार तबै उठू तौ बै तोपदा संसारैं रा ता तू है बोला एक कारदार सा ।
कुंजी सा सचाई झूरी प्यारैं रा बुहार तेरी, होछा बड़ो खरा खोटा तौबै एक सार सा ।

उठू तबै भूरदा संसारे भूरू एतरा जे प्यार सरी पोले फीरें मेगी सची भूरी ऐ ।
मानदारी मान केरू सीभी होछै बड़े राता रौहै लौजें ज्ञानी ध्यानी ओबरी न तूरी ऐ ।
जबै जाणकारें तेरे प्यारे रा प्रभाव जाणू, केरी मूंडी दूंबली थी बड़े बड़े ध्यानीऐ ।
तो बाभी रौहू मन रात ध्याड़ भटकदा अबै ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।। २
भूरी केरी दुनिया री एतरी जे पापी ता पराधी लोक सरी फिरे पाणी न बी पातले ।
लोक जुण जुलमा बै केरदे पतारी दे ता माण्हू जुण रूखे थी नरौठे ता कजातलै ।
केरी परमेसरै बी अंढी दया आसा पांध भालू जौसा धीरें तै बी बणी गेंऐ आसा साही ।
मीटी आसै हौखी तौखै हुई रात घड़ा घड़ी, रौहा सा बियाड़े आसौ हौखी जें घुआड़ी डाही ।
हांऊ आसै पता जाणे अंढे घोलै मोलो मौंभें कुण जेहू जतन सौ अकली बगानीऐ ।
तौ बाभी रौहू मन सदा है भटकदा अबै ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।। ३
कुण जेहा भेष तौबै गौमी जाला पता नई रौहू एसौ गलै हाऊं भीकड़े बदलदा ।
कबें जौहै एजीऐ तू हौथ मेरा ढौकी लौला एसौ गलै रौहू रोज निंदरा न टलदा ।
कुण जेही तान तेरे मना मौंभें बेशी जांदी, गाऐ राग बारी बारी आसौ सीभी जाती रें ।
कोई समै रौंदेआ ता हौसदेआ कोई समै, फूल ढाबें पूजणे बौ तौबें सीभी भांती रें ।
कौस जेही खेला न तू मीली जाला खलीदा, सौ खेल कोई दसीं नोली पंडतें गियानीऐ ।
तौ बाभी रौहू मन सदा है भटकदा अबौ ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।। ४
रोज रोज राती हुई रोज ते भियाऐ केरी, हौखी केरी मीटें पर नीज कदी आई नी ।
भौरू आसौ डेहरू बी आपणे है मना मौंभें, पर तौं ठाकरे ता पाई कदी फेरा नी ।
पाई नाच रात ध्याड़ आसौ तौभें शाधणे बौ, रौहा थी निहालदे नुहार पर हेरी नी ।
जीण रौहै जींदें पर जिंदगी न कौखौ जैहै रौही कुण कसर सौ नोली पछियाणीऐ ।
तौ बाभी रौहू मन सदा है भटकदा अबै ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।। ५
रौहै आसौ तोपदें ता थोध किछ लागी नीछा, कौखौ तौ बभिऐ रा असल ठकाणा सा ।
पूछे जबौ जाणकार बोलू एकी संत लोकै, हौआ सा जरूर पर करड़ा पराणा सा ।
बोलू जोगी लोकें बोला बेश जप जोग कर, भोगी लोकें बोलू यारा भोगा न आनंद सा ।
तबौ मनी रामे बोलू मत होरी जगा तोपौ, सौ ता तेरी आपणी है आतमा न बंद सा ।
तोपू जबौ आतमा ता भालू तौखै गोभुआ दा, बेठा रोंदा बेवश ता दूणू नी जभानीऐ
तौ बाभी रौहू मन रात ध्याड़ भटकदा अबै ता सम्हाल सीभी जानी री ऐ जानी ऐ ।। ६

मुक्त कविरी भाभ-२०

बुझा सा गीता गौंठणी अंढी जैं, पेशदी लोकें रैं मनान डूघी ।
हिकडू जिकदा शुणनू आला बी, जनै जैं तेईं री कौकड़ी छूंघी ॥
भाभ ता दाह फियाड़दी लोभी री, मने री लोड़ी थी बेदण चुंघी ।
किछ ता होली ऐ लोली बी सौंगड़ी, बोहू सा आपणी अकल टूंघी ॥
घाशा सा शौंघा ता कौमदी जौंघा, बाचदी घेरें पराचदी खूंघी ॥

आपणी कथा २१

होछी जेही बरशोह सा मेरी जौमणे नोरली कथ,
चीं चरिकड़ केरदी सीकी जंढा गनाजी रा रथ ।

जौमण-मौरण २२

कीबैं लागी तेरो भौरीदी होखी कफण जबै ताणू ।
गौल् भौरिऐ डुसकं कीबे फेर चफिरदें माण्हूं ।
मौरना बुरा न जौमणा बडा दूहै गला नमूली ।
एकी थीरं ता उडू थियाड़ा होरते सीरू भियाणू ॥

सुख - दुख २३

खुशी कीबे आसै सुखा न हुऐ, मौथा दुखा न झाडू ।
की चीज थी माण्हू रा जीणा ता कंढा आसे फियाडू ।
जीउण आसरा स्वांग तमासा आप आपणी खेला ।
एका नौचीऐ भीतरै फिरै होरें एजिऐ नुआडू ॥

लोभी री आद २४

होछी भौरुई मनीं है नीछी आसै छूढी पतियाई ।
एक पाखली जेही दुआसी तुसै कबै जैः पजाई ।
छूढे जतन केरिऐ थकू तुसा वौ विसरी देंदा ।
टैंहकी जोथी न दसमी शाड़ा मेलणी आद आई पं आई ॥

दाह २५

दाही रैं नीं न बिदरा डोरदी दाह सीभी री बूरी ।
आसा बेवशी रा जीणा अंढा दाही बाभी नी पूरी ।
दाह माण्हूं ए रैं बाडे न पोई री आसें दाही रै बांडे ।
चाहो होऐ सौ पोडे री दुखैरी, चाहो मनैने री भूरी ।

मनै री बेदण २६

फींकरी पाखणी फुकुई दीवैं न तेबड़ी भी आथी मखाला ।
जेवड़ी दाह सा जोसरे मना न तेबड़ी उथड़ी छाला ।।

तेहरवां महिना

फागणा शबातरी री पोरलौ सराजा धूम,
घोर घोर होछे बडैं एसा कौनिहालदैं ।
सिभ लोक लोभौ चाओ केरदैं समान सट,
घीउ तेल नाज पोथा पीशदेंता चानदैं ।
रोत रात गांदैं कांसी ढोलकू बजांदैं गांदे,
नौचदैं नरेली बीड़ी सिगरिटा मारदैं ।
चाणदैं पकैंन रोट केंबदू रैं महादेव ,
पूजा भोग लायौ ध्याने जागरैं रैं बालद ।
मण्डी लागी जातरा न आऐ बोहू देवी देऊ ।
जलेबी रैं तमासौ आऐ बोहू लोक भालदैं ।।३
तूसा घटी बानू कंढ जोंघा लागी शोलदी ।
जेतरैं तमासो होंदैं तेतरी है जोलदी ।

दौलतू छोकरैं ठाकरी दुम्राली, हरजा देणे बौ रीण कोढ़ू तेई छेकणे बौ दौलतू जंगला न ता ठाकरी घोरा खटदे जुंडुऐ। दौलतू री चीठी ठाकरीऐ मूं आगे बाचणे बौ आणी ता म्हीने रे म्हीने एक टपा जुम्राप बी लखाऐ केरू ।

दौलतू री चीठी, ठाकरो वै लिखू थी

राम-राम ठाकरीऐ राजी लोड़ी मेरी जोड़ी जंगला न हाऊ सोभी संघी सुख राजी सा
चीठी नाली लिखूई मपोढ़ गोऊ बे वश, तूसैं लाऊ बुझणा जै कि चकी नराजी सा ।
तूसी सी गराहु जी लखाऐ केरा म्हीने-म्हीने जोस गलो आद ता नुहार रोहा ताजी सा ।
देश गोड पाखला ता कोमबी करारा पर बुझदा नो किछ हांऊ ठंढा यार गाजी सा ।
ठारा करडू रा राजा मूंडा पांधो रगनाजो सा ॥
जेबे आद घोरे री सा हाका पाइये बोलदी तबौ सईं सोठदेग्रा छाती लागी जोलदी ॥१॥

ठाकरीऐ लखाऊ जुम्राप

सूही मेरे बझिया जी उबरें रे सांघिम्रो आज आई चीठी हाऊं कदकी बिहालदी ।
घोरा हांऊ राजी बाजी टांटो टोर तोती ताजी छेता खोल्हा खटदी ता गोरू भेढा पालदी ।
दाहुई की दुःखी मई नांगी शोखो भुखी नई माड़ैं मनैं कदी कोसी मरघा नी भालदी ।
एक दाह कढी जेह्री हांथरैं न निकलिऐ कोई समैं लागी मेरे कोकडू वैं जालदी ॥
रोहा ता सा मनीरामा ठगदी ता टालदी ॥
पर जबैं सघणी वियाहू सेघ चोलदी, तेई मौके सोठदेम्रा छाती लागी जोलदी ॥२॥

चौइलर म्हीना नोवां संवत शणाऊ लागी जातरा चचोली टक रेढ़ी नाती मेलोदे ।
चेत्र ता तुम्रार वासु नागैंरी जबाड़ी आनी ठिरशु ता विरशु बशाखा देऊ खेल्हीदें ।
चौलो लोका लोकणी बी बणी ठणी शौंकणी खोड़ा खोड़ी होसदें ता थोसीदें भरेलीदे ।
भांता भांती होंदी हांटी देउ खेला जाचा नाटी खांदे पीदें नोचदे ता ढीसीदे मड़ेल्हीदे ।
म्रंढै ताल मेरे बोली कप्के नी झेली दे ॥
जबौ लागी साज बेजे बौड़े रोटी तोलदी, तेई मौके सोठदेम्रा छाती लागी जोलदी ॥३॥

लागा अनेजेठ शाढ़ी शिरढ़ें रा काहिका ता सौंज वणजार वाली लारजो री जातरा।
ओरलो सराजा कुलू लागे अंढ़े बाजो जंढी पोरलो सराजा होर मण्डी री शकरातरा।
नाती साती मेल, देऊ देवते री खेल पूछ जाचो रे तमासे पाहुण धामकी री खातरा।
मेरी जाच घोरा जो लूणने ता मौंडणे बो पलमे रा पोहरा सधे वासती री वातरां।

रात रात रोंदीऐ मैं शोगे केऊ साथरा ॥

लोका जादे जाचा हांऊ जांदी जीमी होलदी, तेई मोकें सोठदेआ छाती लागी जोलदी ॥४

शाढ़ा जाचा भूईण टकोली सोरा नाउली न शोइर पछोवा हाजी न्याह नीछेकू आणीऐ।
वासती थी नीडणी घुआला रोहू होलने बो रोपैंता रियार्टं रोहे शुके बाभी पाणीये।
केरनी थी रूहणी जुआरें लोड़ी बाटा मजदूरी सधे भौत तोपु शाढ़ें सोतु खाणीये।
भेड़ सूजी गोभी मूई दूधा देदी गाई शूकी गूरे बोला चेट्टू केरू जामकी जठाणिए।

राजकी गराही एदा शाहूकार जाण्हीऐ।

बशंग केरा खटी हांऊ कौसी न नी डोरदी रीणा आली भोखा लाये छाती लागी जोलदी ।५

शाउणा वसांत छूटा गाश ध्याड़रात पोऊ चोड़ा बड़ें छापरें रं पोट थी टुआंडरं।
नाला आऊ होढ़ ढेका ल्होसणे रा बोढ़ सधे मू डी-सूडी धाह हुआ छोली धामा जौंदरें।
खूढा हुआ चीकड़ ता पर्कें बोणा पकड़ ऐ नौंवी तोड़ा आलो ढेर्पे गोरू भेड़ा हांबरें।
म्होखी रा मखोण पीशु मांगणे रा फोण हुए सेदा लाये सीन्हे सीभ साथरं ता मांदरें।

साल खाणी शाही धाही सेउखाऐ बांदरें ॥

लायो जेबो नासपती टपा-टपी औलदी बरोबादी भालदेआ छाती लागी जोलदी ॥६

शाउण टपाऊ साजा भादरू रा खाऊ सैंघे मने देवी देऊ ता ठराई रौंडा डाईणी।
निहाई बी: केरू चोखा नाऊ होमापुछ पाई बोलु देवी अंबर्के ज आगो नै नी दाहिणी।
लागो आऊ सरग बी रूड़दा ता चूड़दा बी पौऊ जोर कौमैं रा टपाई जोचा शाउणी।
फौले रैं ब्यारी लागे तोपदैं धुआर माल लेखा स्हाव एंदा नी नपोढ़ हांऊ दियाउणी।
लूणने बै घाह हुए नीडणे बै माह साजा शोइरी रा फाह कढ़ें जानू हांऊ पाहुणी।

घोइहो रैं गीड़ें दोड़े कौने हुई टाउणी।

बौठी जो मशीना आगे केल्ही धाना दौलदी तेई मौकैं सोठदेआ छाती लागी जोलदी॥७

नौठा साजा शोहरी तुहार फीकी नोईरी धूपे पोऐ चटकदे दौहडू पौटू ताड़ने।
हुऐ बेल्है देउली शराबा सुरा चाकटी न नशे पीछैं ध्याड़ैं ढउऐ चिधिऐ बगाड़ने।
बाभा सा शर्कौणे बै ता छौली हुइ चोड़ने बै दाडू डाहै चुंघिऐ ता खोड़ रौहै भाड़ने।
हाली जाणा सौहरा पोरे, दशमी बै देवी सैधे छेकं जो है चांदी छेता होलने ता धाड़ने।
एक रांत म्हलो ध्याड़ी दशमी न देवी आगे रौहै कला केन्दरा तमासा मीलू भालने।

लोके लाऐ रात ध्याड़ होलिए नबाड़ने॥

केल्ही लागी द्रासीदी ऐ कुर्छाबीनी फोलदी खाली फाढ़े बेटड़ीरी छाती लागी जोलदी॥८

दसमी टपाईं काली धाने री लणाई कोठा छौली रा फड़ाकणा छलाठा रौहू लूणना।
चुघणे बै कोल्ह बाली लूणने बैं माह रौहै बाथली रा धान रौहू मौंडणाता पूणना।
रौही काया राजी ता टपाऊ बूभा सड़ासड़ी कौमा रौह णा लागी बोहू वेशणा ना दूणना।
तूसो बी सा लोड़ी बौणा काया रा धियानडाहू जानी पोछे करड़ा बी पौंई जांदा शुणना।

आमा दूही ताणे बाणे वूसत सा बुणना॥

अबैं लागी सुपने न जाड़ माड़ भालदी तबै सैंई भौखा लायै छाती लागी जोलदी॥९

मोंधरा न बीझें तेयीं सुढ़ छीड़ी ढावणे ओ गाशा सेधें लागी जाणा हीऊं यारा पूणदें।
गीठें फेर खांदे पींदे कौलदें मसादें गांदें कथा वाता लादे एका होरा चुप शुणदें।
टुप टुपो उठिऐ ते साथरें न तूरी जांदे गुण गुण केरदेग्रा गलाबाता ढुणदें।
खहें लोमी राती मसो चाछड़िदें काटी मैं ता ढालदेग्रा चीणदेग्रा भेड़दे ता बुणदें।
तेई मोके ग्रकल सारोया मूं बेकुण दे ॥
मसो कसै चिणनी सो भीत लागो ढोलदी तेई मौंकें सोठदेग्रा छाती लागी जोलदी ॥१०

पोशा लागीदयाली लाई नेसरूऐ गालो जबो बाजो सेधे लाऐ लोके टपो चुड़ चुड़दें।
बकी बाकी शोहरू एदें गीठे पाधे ढुकी पौंदे रातो तैयें दयाली न थी शोली प्यारो ठूरदे।
छीपी छापी व्याली खाये गला बाता शुणी लाये होछे बडें लागे जबो साथरें न तूरदे।
होसदे खलांदे एका खीता खीती लादे कोई ठठें ठठें भोटीदे ता मनो - मनो भूरदें।
कोकड़ी न मेरे लूण पिपली बरूरदें ॥
भालदेग्रा कालजो न ग्रोग लागी बोलदी, तेई मौके सोठदेग्रा छाती लागी जोलदी ॥११

ग्राऊ साबा माघ शेला खांदा जंढा ग्राघ हीऊ गाश बारी देंदा नी ऐ कौम कढे केरना।
माह डाहे टालीये ता धान रोहू कूटणे ओ खिचड़ी ओ घीऊ लोड़ी चोपड़ कढेरना।
साधू भाट हाली ग्वाले होरा कई जूबा ग्राले कड़ाहू चीऊ पोथे ग्राला लागी जाणा सेरना।
ईंना पीछे जाणे ओ नी ग्रोरें पोरे जूबा देदें देउली न मिलदा तमासा बी नी हैरना।
तंढा लाऊ हीऊं गाश भला भलो पेरनो ॥
ठंढ लागी दाही लायो बोंधा लागी शोलदी काया लागी ठडोंदी ता छाती लागी जोलदी ॥१२

टप्पे गौंतरी दस'त शिवरातरी नी रौहू अंत फागणे रे महीने आचा फागओरी खुलदी ।
फूलो पल्म बदाम चंरी शाई री बसंती सेरी होली लागी घोरा बोणा बुष लागी भुलदी ।
बीजा गुड़ रे गड़ाकेँ गाशा शोर रे तड़ाके फूटैं छूछरू कनिफड़ू बनकशा बी फूलदी ।
लाल घीशो लाये पेटे सेरी न बदाहुलो बराल होखो आली बोदी भगो टुल टुलदी ।
आपू नौठ भूड़ी होले मौउजा न छूढ़ी इशो हाऊं सूढ़ा छीड़ी पीछें बूढ़ी हुई रूलदी ।

केल्ही हाऊ हाली सैंघे ब'जरा वसूलदी ।।

हुई जबे बेबस ता हीका हौथा मौलदो तेई मोके सोठदेमा छाती लागी जोलदी ।।



भरियालै री बधाई

बधाई सोभी लोको हिमाचलिओ मदानी भाईओ,
मनो आसो जाच ओज एंदे भरियाले री ।
जूणा लोक पूजो ईसो धामें रे गदोडुऐ दे,
तीना होणी रोश आशा हिमाचला आले री ।
बिहार ता बंगाल मध्य-उत्तर प्रदेश हरियाणा,
राजस्थान पंजाबा घटियाले री ।
गरमी सा गाल तीना लाक आले लोका तेयें,
शाहा घोटी देंदी लूऽ घामें रे बुआले री ॥ १

देश म्हारा अंढा जोखो छोहे रीता होंदी आई,
गरम सा बोहू जाँ: लाका हिन्दुस्ताने रा ।
एसे गलो गरमी प्रधान देश गोणिया सा,
गरमी रा स्वागत रू आज सा जमाने रा ।
घाम जे नू होऐ बरसात बो नी होणी तबे,
बाकी बरसातीऐ नी नां रोहणा धाने रा ।
एसो गलो गरमी रा स्वागत सा बार बार,
एंदी जांदी रोहा सा ऐ नीम भगवाने रा ॥ २

आसो यारे हिउंदे री नाम जाचा मनो केरी,
मूंडो मूंडी हींउ म्हारी मूंडी पांचो बेशा सा ।
कई कई ध्याड़ें द्वार घावड़ने बीं कठणता,
घूणे रा नशाण नई जाऽ कोस देशा सा ।

माण्हू गेठें फेर गोरू भेड़ा खूड़ा हूड़ ऐ दें,
हीऊं काटी काटीऐ ता माण्हू चोरा पेशा सा ।
अंढी जूनी बी था सैंडो काटिआ सा हिउंदता,
तबे बी निहाल आसा तेईरी हमेशा सा ।। ३

सीथ रीता ढबें ढबे लोड़ी एंदी जांदी रोही,
एसी गलें सदा रोहा सभा बी सवाला सा ।
छड्डू चूड्डू वासंत अथलि लोड़ी छीणे केरू,
चूड़दी वसंति लोड़ी काती चपियाला सा ।
हीऊं गाश पोशा मोघा लोड़ी सदा साल आऊ,
जोस गलें बरतिया बाथरा नुमाला सा ।
आपणा नी जोरा किछ माण्हू गोऐ बेवश,
जांढा डाहे मालक ऐ तांढा रोहणू आला सा ।



दाह २५

दाही रें नां न बिंदरा डोरदी दाह सीभी री बूरी ।
आसा बेवशें रा जीण सा अंबा दाही बाभी नी पूरी ।
दाह माणूं रें बांडे न पौई री आसें दाही रें बांडे ।
चाहो होऐ सौ पींडे री दुखे री, चाहो मनेंने री भूरी ॥

मनैं री बेदण २६

फींफरी पांखणी फुकुई दीवें न कौम नी आथी मखाला ।
जेवड़ी दाह सा जौसरें मना न तेबड़ी उथड़ी छाला ॥

बजोगणी री चीठो लाड़े बै २७

होर हाऊं राजी बाजा खांदी पींदी पोलदी ।
कोई मौकें सोठदेश्रा छाती लागी जौलदी ॥

सूही मेरे बभिया जी उंबरें रें संघिया, औज आई चिठी हाऊं कदकी निहालदी ।
घौरा हाऊं राजी बाजी टांटी टोर तौती ताजी छेत खोला खटदी ता गोरु, भेड़ा पालदी ।
दाहुई की दुखी नई नांगी शोखी भूखी नईं माड़े मनै कदी कौसी सरधा नी भालदी ।
एक दाह कढी जेही हांदर न निकलिऐ कोई समें लागी मेरे कोकड़ू बै जालदी ॥
रौहा तो सा मनी रामा ढगदी ता टालदी ॥

पर जबे सांघणी वियाहू सौंघ चौलदी ।
तेई मौके सोठदेश्रा छाती लागी जौलदी ॥ १

हीउंद धियाड़ा जबो गाश पाणी शेला पाला हीवें रा फरूहरू कदी पूणे लागे पूणदें ।
गेठे फेर पींदें खांदे कौतदें मसादें गांदे गला बाता लांदै एका होरा चुप शूणदें ।
टुपा टुपी उठदे ता साथरें न पेशी जांदें गला बाता केरदै ता दुख सुख ढूणदै ।
खहें लोमी राती मसो चाछड़ी दें काटी मैं ता ढालदेश्रा चीणदेश्रा भेड़दे ता बुणदे ॥
तेई मौके अकल सरौशा मूं बै कूण दे ॥

मसौ कसो चीणनी सी भीत लागी ढोलदी ।
तेई मौकें सोठदेश्रा छाती लागी जौलदी ॥ २

पोशा लागी द्याली लाई नेसरुऐ गाली जबै बाजैं सैंघै लाऐ लोकैं टपी चुड़ चुड़दैं ।
बकी बाकी शो:रू एंदे गेठं पांधे, छीपी लेंदे श्रौधी राती बार्हीऐ थी शौली प्याशे ठूरदे ।
शेलै बौंदा जीकदे ते श्रौगी भेटी सीकदै खेल्हुई पटी किए थी शेलै ट्रंडू लूरदे ।
छीपे छाणे ब्याली खाई गला बाता शूणी लाई होछैं मोटै लागै जबै साथरैं न तूरदै ।
हौसदैं खलांदै बी एका खीता खीती ब्रांदै कोई ठठै-ठठै भौटीदै ता मने मने भूरूदैं ।
कौकडू न मेरे लूण पिपली बरूरदे ॥

भालदी रैं कालंजै न श्रौग लागी बौंलदी ।
तेई मौकैं सोठदेश्रा छाती लागी जौलदी ॥ ३

टपी गौंतर बसंत ठाकू शेला बेटी खंत किछ ध्याड़ै लागी खुल्हदै ता धारा लागी खुलदी ।
देश फौरु लाल शेता शाईरैं बसंती छेता छीटा साही रौंगुश्रा ना बुध लागी भुलदी ।
बीजा ग्रड रै गड़ाकैं गाचा शौरु रै तड़ाकैं फूटै छू छरु कनिफड़ू बनकशा बी फूलदी ।
लाल धीशौ लाटौ पेठैं सेरी न बश्राहुलै बराल हौखी श्राली बींदी भगी टूल टुलदी ।
बौणान बरम फूलै किकर खनोर खिलै पीउंली पठाज्श्राली बागर जैं भुल्दी ।
श्रापू नौठं भूड़ी होलै मौउजान बूढी इसै हाऊंछीड़ी सूढ़ी पीछैं बूढ़ी हुई सलदी ॥
केल्ही हाऊ हाली सौंघै बासती वसूलदी ॥

हुई तबै बेवश ता हीका हौथा मौलदी ।
तेई मोकं सोठदेश्रा छाती लागी जौलदी ॥ ४

सौंघै लागी होली फागा फागली रा समा लागा जाचान चचौली टकरेड़ी नाती मेलीदे ।
कूलू लागौ बिरशु सराजा पोरैं ठिरशु निरगु निमंडता जब.ड़ी देऊ खेल्हिदे ।
चौलै लोका लोकणी ते बणी ठणी शौंकणी खीडा खीडी हौसदैं ता थोसीदै भरेलीदैं ।
भांतो लागी हाटी देउखेला जाचा नाटी पींदै खांदै नौचदैं ता ढीसीदै मड़ेल्हीदे ॥
श्रंढे ताल माल मेरे कभबौ नी भेलीदैं ॥

ईना ताला भालदेश्रा हौखी लागी शौल्दी ।
तेई मौकौ सोठदश्रा छाती लागी जौलदी ॥ ५

निहारी रातीऐ

कालटी रातीऐ तेरी कमाई।

"तेरैं चलितरा भालदे मांदिऐ, रात नी सूता ता होख नी लाई"

खसमा साम्हण राणी नरोलं रो, कदी नी कौसीन शकल रिहाई।
सूरज ब्याहूऐ जोतड़ टपू, मंतरैं मांतरैं प्रगटी आई ॥ १
केरु निहारा तें चौंउ कनारे न, प्याशा बखाइआ पीछै सकाई।
आऊजा देउर चंदर मामा, फीरी पियाशी ता खिड़ खड़ाई ॥ २

सन्हका मारदे तारे नगौणे, एकैं ता ऊजें न छाल्हा बी लाई।
चंदरा भालीऐ कोई पतारुऐ, एका ता बुझणा घोर जुआई ॥ ३

धीरी ता होऐ तू एणे दै ब्याहू, नई जै तेरी मैं चुगली पाई।
आपणी खाखीऐ बाणली सची, चाहो तू कसमा केतरी खाई ॥ ४
चंदे रैं गोरै गलोटैन कालख, काजल तेरा सा पक्की गुआही।
सुखौं रा तेयें निहाली थी लोकौं, लींडा ता चोर री साल पकाई ॥ ५

भुंबड़ू बाटीऐ ठूरी ककटी, तेरीहै नदरी ढोकणी लाई।
ठिमकी नोली ते रामशौरै, पीछे न ठूरदे डंबर खाई ॥ ६

जेतरैं नाढ़ ते बालान तेरैं, चोरा बैं भौउजा साध: बै फाही।

धाचुऐ तेरैं सी ऊंबलै काउड़, ऊलू शियाली ता घाही ता शाही ॥ ७
हुआ जैं लाड़ैं र एणे रा बौगत ठंढुई तेतरी सकपकाई।

गोभुऐ लींढ पतारुआं देउर, आपू बी फिरदी फुलदी शाई ॥ ८
मरधी केरी भियाणू चमाकिऐ, कालटी रौंड हुआलिऐ पाई।
रोंदे पकारेदे सीभोऐ: तूसै हौसू रैं ठीपूऐ जीमी शगाई ॥ ९

लुच्चीऐ तौबै बी टकरु लुचा, जढैं बै तंढा ता भाटा बै नाई।
खोउ तमाशा बेवशैरा सूरजै धाउड़ी खेला न रात भियाई ॥ १०

बजोगी री दुआसी—२९

कांगड़ै धीरला एक अध्यापक छोकरा छुटी काटीऐ आऊ ता पोरलैं सराजा नोकरी पांधै जांदैआ जलोड़ो जोता न दुआसुआ, रोंदा बेठा, हिकटुईऐ रोंदा रोंदा टुंबला पौउदा थी ता तीसैं हाऊं बी चौलूदा थी, तेईरी दशा भालिऐ छौडी बी नोलू ता पुछिऐ दसी बी नीछा, मसैं कसौ गढेरू, तेई री गलं रा सार मैं बौता हौडदेआ अगलै इना टपैं न गौंठू।

-पींडा सा औखै सुआस नी आथी-

पुछदे माता जी विथा बै आसरी, चिंधिऐ आसैं दुआस नी आथी।
लागात हौंडदैं म्हारी की तौड़ी री कौसीरी आसा तलाश नी आथी ॥ १
कूगी ब शौंउक आथी नी सुख री, कौसा बै भूरी री आश नी आथी।
कौसरी भाभा नी सरगा छुंघदी, आशक तबै निराश नी आथी ॥ २
मन दुआसुआ बौता न हौंडदं, दुआसी री केरी तलाश नी आथी।
रौहू पलेटुई उथड़ैं चांघा न ऐणे रा पूरा वशाश नी आथी ॥ ३
लोहू शकौउ ता हाड़कै निकतैं, पोड़ न तिनका मास नी आथी।
घीशदै केतरी रौशी न बाड़ुई खूहै रं पाथरा घाश नी आथी ॥ ४
ढगुऐ बांकी नुहारा बै भाल़ीऐ कागदी फूला न बास नी आथी।
खडी शचाणी सा मनै री बेदण, पौधरा हुरला श्वास नी आथी ॥ ५
केतरा भेलला फूलै रा माणस, खौरशू बौन बरास नी आथी।
हुआ परेमी की जौसरैं टैंडं न, लूणके पाणी रा गाश नी आथी ॥ ६
मनै रै घोटा छनेरने तैं इएं, हौखी न पोरै नकास नी आथी।
भूरी री दाही न तीछी ता डूघी, पडवा नौई वियाशनी आथी ॥ ७
माणहू सी मौरा ता लोभी सी जौलदा, लोभा ता भूरी रा नाशनी आथी।
गौंई गशीटदा पीछैं बै कौकड़ू, सच्च सा बेवस ऐ हास नी आथी ॥ ८

चतर मसैरी राती–३०

भादर म्हीने री रात निहारखी कड़कदी बरसाती।
हांडे परदेशिया काटणी कंढे तेरे बजोगे री राती॥
सरगा शुकिऐ चंदर भाड़ुआ पूनू बी फीरु निहारा।
शौउंकी मांण्हू री भाभा बी शुकदी लोभणी लांदी पकारा।
बाहरै लागीरै शूकदै याजीऐ छेत बगीचै ता बौंणा।
लोभी बजोगी रै कौकड़ू शुकदै गोरु रै शुकदं थौंणा।
कांया ता कूजे रै कौंडे न बिन्हुई दोहरी बिन्हुई छाती।
गाशे रै टीपू बी चुभदै लागै तेरे बजोगे री राती॥ १

बिदलू चौलदा रूशिऐ जबै जो भौरदें लागणा सींधी।
काजल धोंईदा हौखू रैं पाणिऐ पौरसू पौड़ीऐ बींदी।
जाइरु पाणी न भौरुई जोका चौलै पतारुई लोका।
मीटुई हौखीऐ उठी बजोगण भाली ना शूणिऐ पींदी।
होर का होग ऐ फीरु संसार ता बुध ठकाणे नी आथी।
ओग बजोगै री सौहुईनी छीड़े तेरे बजोगे री राती॥ २

बामी री चीरुई कुरती बांही र टीरदें कांगणू चूड़ी।
दोथकी बागर लहशकै लांदी बादला छिड़ैंगा चूड़ी।
काया रै बाजदै हाड़कें पींडे न तिनका मास नी रौहू।
पींडं ना पीउली त्रापड़ी रौही ता पाणी न पातला लौहू।
रौहू बशाह नी आपणी काया रा चुप सीमितर नाती।
भींगटै घीटी बजोगण काया तेरे बजोगे री राती॥ ३

देबतो राकसा फीरी मनांदीता दुनिया भालिए हौंसी।
पींडं री चौंई बै सावण मौलू ऐ धोउई नीछी दुआसी।
बरत केरिऐ तीरथ हेरै छिदरै छोदे ता पीपली भासी।
हीशी है नीछऐ जतन केरिऐ मनान ओग जैं बौसी।

टेपले बणिऐ खुल्दा कौकडु शौंग गलोटं ता छाती,
भीतरै बाहिऐ पाणी रा ओछड़ा तेरे बजोगे री राती ॥ ४

बीझीदा सरग शुकदी हौखी उड़दै भालीदै झाजा ।
झांझी दी धूई री भीतरै बाहरै फिरदा जीउड़ ताजा ।
लोभी ता शौंउकी लोका निहालदै एजदा शोइरी साजा ।
रोगी बजोगी ता जोल्दै खुलदै ढाबदै घाहा ता नाजा ।
कीजी बै केल्ही बै विजया दशमी कीजी बै शौउज काती ।
रौही वेवश निहालदी जौलदी तेरे बोजोगे री राती ॥ ५

नुआरै ताल — ३१

ईना ताला भाल्देआ हौखी लागी थकदी ॥

एकी ध्याड़े भालू जोथ रूशी नौठी चंद्रमे न ।
बेठी जाथै दूर जंढी उडी नौठी फूकरै ।
एकी ध्याड़े गूणू फूल ओलू जबै धोरनी ता,
पाथरैं रै कालजै रै हुऐ शौउ टुकरै ।
एकी ध्याड़ैं हौखू लागै हौंखी पतियां दै आसै,
एंदै जांदै रौहाम तू मत शुकै फिकरै ।
एकी ध्याड़े फिफरिऐ बोलू लूपी भाहिड़ीऐ,
छुंघणे दै एकी घेरै तबै केरी नखरै ।
अंढी अणहोणी गला हुई जंढी सुपने री,
फिफरी थी चाछड़ी दी लूपी थी पटीकदी ।
ईना ताला भालदेआं हौखी लागी थकदी ॥ १

एकी ध्याड़ं कौली लागी भौंउरा बैं बोलदी जं,
तेरैं ओठ जूठै सी तू हेरी मूं बै छूंघदा ।
बोलू तबै भौउंरै तू मत केरै चांडा अगै,
तू है छूंघ मूं बै हाउं गई तौ बैं सींघदा ।

अंढै ठठै मसखरी गला बाता लागरी थी
शूणू पीछै धीरै कोई मसखरा खंघदा ।
तबै कौली झांबड़िऐ ढौकुई थी भौउरा न
बोलू भाल कुण आऊ होला मूं बं चुंघदा ।
एई तहैं मेल ता थी हुआ पर डौरा लायौ
मनौ मनैं हौसदी ता जाहरा न झीकी दी ॥

ईना ताला भालदेआ हौखी लागी थकदी ॥ २
एकी ध्याड़े जिंदगी रै तड़कदै धूपौ पांधैं
मिलै दूई चीड़ू खुल्हैं सरगा न उड़दैं ।
छूणुऐ ना टूनुऐ नाकिछ छेड छाड़ हुई
होई गोउ प्यार चार नैन जबैं जुड़दैं ।
लागै जां ढुणदै ता होणी रौंड हौसी पौई
बागर बियाना फिरु गाशै हुऐ चुड़दै ।
छुटी गोऐ हौथ जुण चौखे मुलाकाती बै थी
आंगी आंगी लागं दूहे बागरी न रुढ़दै ॥
एई तहैं काटुई थी रात सौ बजोगा मौंझै आद रौही धुखदी ता भूरी रौही घुटदी

ईना ताला भालदेआ हौखी लागी थकदी ॥ २
एकी ध्याड़ें आऊ एक थकौरा मसाफर
बशावां दूई घड़ी एक घुटु पीऊ पाणी रा ।
चैंकू तबौ बुजका ता टुल टुलै भालदेआ
चौलू पर जंढा तेयै रसता नी जाणीरा
छेईरी नुहार किछ अंढी बेठी मना मौंझै
जंढा कोई माण्हू हौऐ भूरी पछियाणी रा ।
घौड़े केरी मूरत मशेले केरी मनो मन

जोस गलै चिन्ह रौहैं तेई री नशाणी रा।

अंढा मन बेउरा ता बुध गोई काची जुण एंदं सौंघे एजदी ता जांबे सौंघे सिकदी

ईना ताता भालदेग्रा हौखी लागी थकदी ॥ ४

एकी ध्याड़े घुलदेग्रा मल्ह पौउ थाल्है तेयै
बोलू जै ता एक पाली देंदा मूं बै होरतू।
तबै तोवो दसदा तमासा बाजी मारिए ता
पीठ देंदा लाई लांदा केतरा है जोर तू।
जा यारा छोड़ू अंढा बोलू जीतै होंदे मल्है
एज दूजी घेरैं भी ता बणाई देणा मोरतू।

घूलें दूजी घेरैं तबै पासा पौउ उलटा ता
बोलू तेयै केर अबै बचणे रा धोर तू।
एई तहँ बिगड़ी सो खेल्ह जीती होंदी बाजी
मल्ह पछतइंदा ता बिंदरा थी हौसदी

ईना ताला भालदेग्रा हौखी लागी थकदी। ५

एकी ध्यडे सरगा न तारा पौउ चूटिऐ ता
एकी खोलैं कोल्है फाढ़ै मोभ सो गभेई डाहू।
बोलू ऐकी चीड़ूऐ बरादरी न छुड़कीरा
कोबो एई बिटलैं बौ बास यारा देई डाहू।

कोल्है बोलू दुखी सौंघे दुखी बौ पियार होंदा
बिछड़ी रै डाने साही आपू आगे सेई डाहू।
फूला बौ ता ठापरा सीसिभ लोक हौथो होथ
चूड़ू जुण होखू माटैं फाढ़ै न सो लेई डाहू।

अढे ईना चूटैं छूटं बिछड़ें जुआड़ुए री
वीथा तीना बेवशो री कलम नी लिखदी
ईना ताला भालदेग्रा हौखी लागी थकदी॥ ६

बेउरा—३२

माण्हू रैं हलै न होरी बै तोपद आपू है हाँया सा केतरी घेर
होला बी नंई की धौरनी पाधैं ऐ थोघ नी लागदा देउआ मेरं ॥
बूझा थी आपू बै लिखदा चिठी ता पुछनू कोसा न आपणा पता ।
दसदा कौसकी कोखो सा हाऊं सौ छूडान मूं बै जै तोपदा बौता ।
नां ता भटकी भूली रा हाऊं ता शौलंदी मेरी नी हौंडदे लौता ।
तबै बी हल्ले न ढाबीदा कभकं छूडा न आंगी बी बुझिया साता ।
आपणी जौंघै घरेसुआ गारा आपणी जानी रा आपू है मेरे ।
माण्हू रैं हल्ले न होरी बै तोपदै आपू है हाँया सा केतरी घेरं ॥ १

यारी न भेरी मैं आपणे आप रै आपणी जानी रा बी बैरी ।
भूरु बी आपू बै हाऊं न मुकता सिभ मसीबता संघणी केरी ।
आहंकी हौसी बैं हौसदै हौसदै रण बौता न जान खपेरी ।
छूंडा न होला की नंई बी होला हादुई हौखी बी हौसदी फेरी ।
चौलदा हाऊं ता तेई ठकाणे न जौखो जं लोक रं बेशदे डेरे ।
माण्हू रैं हलै न होरी बै तोपदैउ आपू है हाँया सा केतरी घेरं ॥ २

रुप नुहार ता रंगे री गल की आतमे सरी सा बदला समा ।
अबै ता एतरा सरो नो फ्याड़ीदा हीका न मन की पाथर जमा ।
पता नी चिन्हनु नई की आपू बै बिछड़ै हुआ सा बौगत लौमा ।
आपणे आपान निपट आंगी सा पाखला जंढा जौ तुमा ता हमा ।
बुझू थी जौखो जौ पुजै ठकाणे ता निक तौ तौखं बी जिऊ पैं फेरं ।
माण्हू रै हल्ले न होरी बै तोपदै आपू है हाँया सा केतरी घेरं ॥ ३

मनाल करड़ी—३३

हीउंदा निहालदै श्री होऊंरैं पुश्रासैं जीउ
भीउं चीली बीणे ता मनाल होर करड़ी।
होऊं रै हिमाचलो रै जीऊ श्रासैं जीण म्हारा
हीऊं लोड़ी बोहू सारा श्रासा बो मकरड़ी।
श्राऊ जबो उजे न कवल्ला हीऊं बूटी बूटी
तबो लागो सोठदै जो गल हुई करड़ी।
खाइंदा ता माटा गटा रोहिदा डुश्रारा मौंभै
एली जो हियाईणी ता देली श्रासा दरड़ी॥ १

बोलदा मनाल लागा शुण बोड़ी करड़ी ऐ
चोलाम गराहुँजीरी सेरी पोरं चुगदे।
जगा होली नांगी जो गेहूं होलो होरं राई
शाई होली फुलदी मटर होलें उगदे।
बोलू तबे करड़िऐ चुप बेशा संघी होरो
नीडल गरो सेरी श्रासा बो नी पुगदं।
हेड़ी होले तुबकिऐ पाशी ता गलेला ढाणा
माण्हू होले छापीदे ता कुतो होलो घुघदे॥ २

एक गोउ दुख तूसो हुऐ श्रंढे बांके चोउ
कुंठान नो जीउ ता परीउ श्रंढा शोभला।
सिभ रग चटकदे चिलकदें थेबें साही
होखी पूंजे पीउंलो ता डाल पूठा लोभला।
मूंडा पांधे चोढ़ जंढी कलगी सा राजे श्राली
बुभिया सी जंढा कोई बादशाह रोभला।

अंढै तूसै बाँके भोल् भाल् सी पहाड़िऐ ता
बीणै रैं सी भादर सभाउ सा नथोघला ।।३
रुप रंग तूसरा जे मीली जांदा मूंबै लोभ
बेटड़ी रा पूरीदा बचाऊ तूसा जानी रा ।
रुप ता शंगार सा पियारा पर पैहिलै ता
लाड़ा जुण मरध सुहाग सा जनानो रा ।
म्हारी जान जाऐ ता सुहाग लोड़ी राजी
चला आऊ वसुग्रास ग्रंढा म्हारे हिन्दुस्तानी रा
केरी गल उलटी शंगार धीना मरधा बै
लागा की भलेखा स्हाब खोवा भगवानी रा ।। ४
ऐहै रुप रंग मेरा बैड़री सा संघणिए
एई पीछै जान मेरी शौंघै पांधै रौ हासा ।
एई पीछै जोता पंथा उथड़ैं नगोहरा न,
गोभीदेग्रा खार भार जूनी बीथ सौहा सा ।
जान माल ग्रापणी गभरने बैं रुपा पीछै
जंढा कसतूरी पीछै बीणा दुखी होग्रासा ।
माण्हू मतलबिया स काणा वैरी म्हारा, कल-
गीरं लोभा पीछै शान म्हाचलेरी खोग्रा सा ।। ५
नाटी ग्राली कलगी न देशै रैं मनाल फीटै
टोपी कोटा पांघे मूंडी म्हारी हाली ग्वालैं री ।
चोलें टोपैं धाढ़ड़ैं वनारसी दपट्टै, वाभी
कलगिए दुतिया बी रौंदी जोड़ी बाले री ।
हांऊं शोभा तुसरी हिमाचलो रे भाई भीणो,
मुंबै जै फटेरलै ऐ शौंक सा दुग्राले री ।
वोण हुऐ बेशर्के कनून रौहे कागदा न
फीटी ग्राई जात ग्रासा बेवश मनाले री ।। ६

देश पियार—३३

बेटड़ी मरधे रा कठा राग

देशा सेंघे प्यार, म्हारा देशा सेंघे प्यार ।
देशा सेंघे प्यार आसरा देशा सेंघे प्यार ।। १

बेटड़ी:— वीर बेटड़ी देशं री आसो
मरध:— आसो जोधो ज्वान
बेटड़ी:— दोसिऐ मरधा जुधा भेजदी
मरध:— आसो लड़ांदे जान ।। २

दूहे :— आपणो सा सरकार ।। आसरा देशा सेंघे प्यार
मरध :— मोरदें मोरचे पांधो आसो कदी नी जाणी डोर
बेटड़ी:— खोल्हा छेता ता शो:रू गोरू आसो सम्हाले घोर
दूहे :— ढोऊ देशं रा भार, आसरा देशा सेंघे प्यार ।। ३

बेटड़ी:— जदी कोसिऐ हमला केरू ढोकी उबली बोत
मरध :— सूतें आथे रा लींघट ढोकू शाधो आपणी मोत
दोनों:— धीनी करड़ी मार आसरा देशा सेंघे प्यार ।। ४
आसरा देशा सेंघे प्यार

आसे जागे—३५

दूहे :— जागे देशो रें मरध बेटड़ी, देशा स्वारदे लागे-हो
सभी देशा न आसरा मुलख लोड़ी निकता आगें-हो
महध:— उठा कोमा वो मरध गाजिश्री मता सोठदें कीछे
बेटड़ी:— एई देशे री बेटी सी आसे बी कीवो रोहणा बीछे

दूहे:— सीभी मिलिए देशा सुआरना चोला नाटी रें रागे हो ।। १
सभी देशा न आसरा मुलख लोड़ी निकता आगे हो ।।

देश बणाणा—३६

उठा ड़ भाईश्रो घोर बणाणा।
सोई नी रोहणा देश जगाणा ।।

होरा जे मुलख जागें थी श्राघे पौढ़िऐ गुणिऐ निकतें श्राग ।
श्रारो गलामी न रोहै न भागे नोचणा पौड़ा थी लोकें रें रागें ।।
काल छुटेरू सा देश पराणा, उठा ड़े भाईश्रो देश बणाणा ।। १

शोठ करोड़ा सी बौसणू श्रासै, घोर सा जोजरा बौसणू खासे।
घोर थी श्रासरा केलो री नासै, लोकें जुश्राड़िऐ केरीरा पासे ।
बेशका केरिऐ डाहू कराणा, उठा ड़े भाइश्रो देश बणाणा ।। २

श्रासरे लीडर बड़े सताजा नोंवें विधाने री नौंवी रुश्राजा ।
सिभ सी परजा सभी है राजा राती दियाली सी ध्याड़ी सी साजा ।।

जादी रा पौहिला शगन पाणा, उठा ड़ें भाइश्रो देश बणाणा ।। ३
जेतेरे धरम जात बरादर सीभी रा एक बरोबर श्रादर ।
जात सा माण्हू ता हक बराबर कौमा मताबक सभाहै श्रादर ।।
जुण सताज सा सौ है सियाणा, उठा ड़े भाइश्रो देश बणाणा ।। ४

पातला भूंगा कसोथै थी बोहू, कठा नुश्राड़ू थी लागणा लोहू ।
योजना केरीऐ बुटड़ू रोहू, बौरशा पौंजे रा वौगत डाहू ।।
तेजा न एक कसोथा गुश्राणा, उठा ड़े भाइश्रो देशा बणाणा ।। ५

योजना बोलणो कौमै रा तहीं, बाभी सकीमें नी खोइंदा खहीं ।।
ईना न जूंडीणा शोभली तहीं, श्रंढा सा श्रकली श्राले रा सहीं ।।
स्हाबो नुश्राड़ना स्हाबो टपाणा, उठा ड़ें भाइश्रो देश बणणा ।। ६

कोम थी पैहि ले जूणा जरूरी, पैहिली दूजी तरीजीऐ पूरी ।
चौउथी पौंजा बै लीडरा बूरै, इना सा देशै री एबड़ी भूरी ।।
सरगा बूझा सी देश पजाणा, उठा ड़ें भाइश्रो देश बणाणा ।। ७

हिन्दुस्तानी सी शौठ करोड़ा, नाजा वियाझर्दें मुनुश्रा चोढ़ा ।
घौरा थी सारी है चीज रा तोड़ा, सीउणी नाम थी लोका न लोड़ा ॥
लाऊ बेश्रंता समान बणाणा उठाड़े भाईश्रो देश बणाणा ॥ ८

चोऊ कनारैं री सड़का हेरा, मोटरा बिजली चौउ चफेरा ।
पाणी रे नलकें दूधे रे ढेरा, जौमी गरीबा न घौरे बे डेरा ॥
डाक मदरस ग्रां प्रमाणा, उठा ड़े भाईश्रो देश बणाणा ॥ ६

श्रापणी जीमी बे खूब पजेरा, बेजा ता खाद पजाउ भतेरा ।
भाजी ता नाज बी फौल बधेरा, रौजीऐ खाऽ ता ढव्वे कठेरा ।
केरा तजरबा नौश्रां पराणा, उठा ड़े भाईश्रो घौर बणाणा ॥ १०

शांति संतोषा बे ऐमरजंसी, गरीबा जियाणे बै सूतर बीः ।
श्रबे भी जागे ता डूबणा भी, एता न बधका बोलणा की ॥
सीभी बेवशी रा तहीं वशाणा उठाड़े भाइश्रो देश बणाणा ॥ ११

श्रासै हिन्दुस्तानी — ३७

श्रासै भरारू सी शोठा करोड़ा ।
हिन्दुस्तानी सी शौठ करोड़ा ॥

जांदे फरंगिऐ पाऊ खरोला, हौसदे घौरा न पाउ बछोड़ा । १
बौंडुऐ घौरा न खोली न श्रोड़ा, श्रोज सा टबर शोठ करोड़ा । २
म्हारा मलेगा सा मनें रा भोला, खटवा बोहू ता ढूणदा थोड़ा । ३
श्रासे नी मारदें फोकी लपोड़ा, कौढिऐ शेटणा नाजे रा तोड़ा । ४
पारटी बाजी रा गिद गदोड़ा, एकी रा पोलड़ा होरी चोढ़ा । ५
फीरदें घौरठा पोड़ला रोड़ा, छालीऐ शेटला हीके रा फोड़ा । ६
बणिऐ रौहात होथड्डू जोड़ा, बेवश गौरी रे हाडकू चोड़ा । ७

चीने रा हंबला—३८

उठा देशों रे बेटड़ी मरघ घोरा कुंभल लागा ।
सीभ टबर होआ कटेटं ई, मत भौरा बलागा ॥ १

घोर आसरा हिन्दुसताना, मस करो छटेरू ।
तीहा बोरशा भीतरै एतरा, सोथी साथिऐ केरू ॥ २

बेटी गाभरू भारत माता रै आसी शौठ करोड़ा ।
ह्याऊ केरिऐ बणात फौउजी, थोसा बैंरी रा चोढ़ा ॥ ३

टंड़ा लागा अब चीनीऐ चोरैरा, आसा लूटदं आए ।
चुप चुपें बडे जोत री भीती न, बीहू कुंभल पाऐ ॥ ४

आसा ठाकणे पेशदै पेशदै, छेकं निकल आगै ।
बुरी मौउतीऐ मौरना पौड़ला, जं ता अबी नी जागे ॥ ५

बडा बुरा सा चीने रा आदमी, माण्हू चापणू आला ।
कोई तेई रा दीन ना धरम, ईना तिबती भाला ॥ ६

मता भूरदें जेउर गहणे, मता ढबुआ घेला ।
रोणा पौड़ला हीकड़ू भौनीऐ, चीनी लूटीऐ नेला ॥ ७

लागै उठदं देशौ रे लोका, चौलें भरती होंदे ।
कबौ पुजदं मोरचो पांधो, खांद चीनी बो दौंदै ॥ ८

बडे जोरिऐ आसरें फौउजी, लागै धाकदें पीछे ।
केरा मजत पीछे न, तिनरी, जीऊं फिरलो तीछे ॥ ९

छोडा बिदरो आचा जणितरी, साजौ बेजै तुहारा ।
सारी मौउजा छोडिऐ बेवशा, ईना चीनी कुहारा ॥ १०

पंचायती राज—३९

हा: कटे पंचाइती राजा

सौंझ पौडिऐ रोज दिग्राली दोथी उठिऐ साजा । हा कटे०

नई रौहै ग्रबै ठाकर राणे राऐ राजै री खेला ।
जूनो निभारी सिधी फरंगी री पाले बगारी रा भेला ॥ १

ग्रासे सिभ सी परजा देशै री सिभ देशै रै राजै ।
पाल़ फिरदै सिभ परेखणे कुण गाजै ता बाजै ॥ २

एक जेहै ग्रोज बेटड़ी मरध नई जातीऐ बडैं ।
तेहै बडै जुण देशा गरां न हौथ जोड़िऐ खडै ॥ ३

राम राजौ रै गांधी रै सुपने ग्रोज हुऐ ते पूरै ।
राज बणे ग्रबौ सभी गरां न जुण लोका बौ भूरै ॥ ४

फाटी फाटी सरकार बणाइऐ हुग्रा देशै रा भला ।
तर्हां केरना ग्रापणे लाकै रा म्हा र हौथेरी गला ॥ ५

होछ होछणू राज बणाइऐ सीभी लोकै रै जीभ ।
राज केरना दसणा सीभी बौ एसो बांकी सकीने ॥ ६

ग्राबां फाटी री होछी पचाइती ब्लाक समती बडी ।
जिला परिषद तीना न बडी बडी गला बै खडी ॥ ७

एकी राजा न एक ग्रसैंबली केरी देशा न सारै ।
राजा भीतरै कनूना सुग्रारडी इंतजामा बै म्हारै ॥ ८

लोकसभा सरताज पचाइती दूहै पारलीमिटा ।
सारै देशै रा भला व चारुदी नई ग्रासा बै चिता ॥ ९

एई ढंगे रा राज पंचाइती नेता लोकै बणाऊ ।
ग्रबौ गल सा ग्रासरै जीमे री ठीक लोड़ी चलाऊ ॥ १०

माण्हूं छांटीऐ पंच बणाणे जे कुण रांभड़ा खोटा ।
जात ब्रादरी आपण पोपण छोडी भौरनी बोटा।। ११

जुणा बणे परधान ता पंचा केरें बिदरें प्यार ।
धोखा केरलै बिदरा सैंघ ते लोडी आगी गै हारे ।। १२

जीतें ना हारें त्रिधिऐ बिजी गै फीरे प्याश निहारें ।
बंदो बसत देशै केरदे आगे पिछले ज्वारें ।। १३

आद डाहृणी तदकी रसम जुण कसमा खाई ।
लाके मुलखो री तेइएं लोड़ी मान दारी नभाई ।। १४

न्याऊ केरदी न्याय पंचाइती बाझी टिकटे फीसे ।
पंच आंएं रें जाणा सी मांबले झूठ सच सा कीसे ।। १५

होछी खाखीऐ बोहू की ढूणनू गौऊ माण्हूं बेवशा ।
कौम केरा अबै देशा बणाणे रा सोठा पिछली दशा ।। १०

बेटड़ी पंचा—४०

राज पंचाइती लागा मांदीओ राज पंचाइती लागा ।
देवा छोपदी ढाबुई औज कूलू घौरं री भागा ।। १

औधी दुनिया बेटड़ी बोलणी औधी मरधा लायें ।
डाही बेटड़ी बौंचिऐ फिरलै कढै देशो रे भागा २

नोवीं बणी सरकारा ओ मांदीओ नौवे बणे कनूना ।
हुए हाकम बेटड़ी बाई कें भाला म्हारें दमागा ।। ३

धौणी बाईकें बेटड़ी मरध सभ घरमा जाती ।
एकी छाटे रे मणनो सिभता मौंभै मुलख धागा ।। ४

काया पलटी हिंदुसताने री फीरू निहारे रा ब्याशा ।
लोके कुलू रें दिल्ली न जाये बाजो नाटी रै रागा ।। ५

नईं रोही अबी जोंघे रे पीलड़े माण्हू गौणुई आस ।
बणे बेहणी भाई बराबर फीरे आसरे भागा ॥ ६

हुई भादरा दुरगा हलियाबाई झांसी री राणी ।
विजें लछमी इंधरा गांधीऐ फूकी बैरी रीफागा ॥ ७

धीनी अबो पंचाइत मिबरी भारत सरकारे ।
आज बेटड़ी गौणुई माण्हू हुआ देश चुआघा ॥ ८

द्रोही केरीऐ केराम न्याऊं बी नई तरफदारी ।
बारे हेरदा कौशू नराइण पारे माहुटी नागा ॥ ९

बूरा हेरीत बूझदे मरशो आसे मजती आई ।
रली बणीऐ लाका बणाणा सा जंढी फूलै री बागा ॥ ११

माड़ी जेही मूं माण्हू बेवशै रीशू णा गल न मूली ।
न्याऊं केरीऐ भारत माता रा होला सदा सुहागा ॥ १२

छुंघ छेड़—४१

छुंघा छेड़े रे बहमी लोको सारी दुनिया हेरा ।
कलिजुगा नबाड़िऐ आऊं सतीजुगे रा फेरा ॥ १

लमें चौउड़े एई संसारा न शौउ शौठ सी देशा ।
सारे लोका सी एक बराबर चाहू कोई बी भेंशा ॥ २

खोई लागो म्हारे हिण्दुसताना बे बोदू धर्मा जाती ।
गला गला पीछे बौंजिए डाहैंदे सोरे टबरा नाती ॥ ३

एकी गबर मिटे रे गाभरू भगवाने र बेट ।
सोरे भाई हरिजन सवरण कीबो केरने फेट ॥ ४

फेटं केरे जुण आपणे घोरक वणे वैरी मारें ।
ओधा मुलख बौंडिऐ पाऊ लाऐ घोरा न आरे ॥ ५
रुप रंग सी एक बरोबर एक जेही नुहारे ।
मोथे बांधे नई कौसी रें लिखी रा कुण खरे ता माड़े ॥६
जुण माण्हुए बाहंका केरु नई देखा बौ बुरा ।
देऊ एजा सी बाहंको भीतरे तबो बणा सी गूरा ॥ ७
कुल बौसुआ शौठा करोड़ा न पंद्रा केरें नभागे ।
एकी जौंघ रा फाखरा मुलख कंढे सीकला आगे ॥ ८
जे नाम थी साधु महातमे देशासबेरदं आऐ ।
ऊथड़ं नीशटं हिन्दु समाज कौम तीनरे गुआऐ । ६
ऊथड़ं नीशटं छेत कमोणे बौ जढं होआ सी बूरें ।
टौंढा बिगड़ू आसरा मुलख जाती पाती कसूर । १०
शूचो खाईणू आली चताणे बौ, बाहवी लोको रा एका ।
हरिजन नां गांधीऐ डाहू नई कौसी रा ठेका ॥ ११
कौम केरदं बाहकी जाती र, रौहे बाम्हणा शूचो ।
छोड़ू बाहंवी आपणा पेशा बी नई गोणुए शूचो ॥ १६
धीनी ईना बौ कीबौ रिआईती पीछें बाहवौ रौहे ।
भेद नई सरकारा बौ कौसी रा खरं खोटं नी कोहे ॥ १३
पौंजा गूठी साही एक बराबर आमा बापू बौ भूरी ।
घाटा केराम सोरे भरारू बौ तीना लागणी बूरी ॥ १४
जाइदात जुण बापू री सीभी भाईरा बांडा ।
हेसा बेवशा भाउ रा मारिऐ नई घोड़नी चांडा ॥ १५
पचाइती रौंबली लोकसभा री मिबरी नंबर दारी ।
धीनें मर्जाफें ता शोहरु पौढ़िऐ डाही नोकरी न्यारी ॥ १६
दसा बौरशा न ठीमवो लोड़ी जूणा आगै सी लोका ।
पौढ़ी खटीए ठीमका आगलो छौडा नशो री पोका १७
आपू मौंझ रौहे ऊथड़ें निशटें औजा तौयें सी जांढें ।
एका नई जबो आपू न बाहंवो होरा मिलली कंढै ॥ १८

ढ़ौत—४२

सूतै दे भाइग्रो द्वार धुग्राड़ा दुनिया लागी ग्राउघियाड़ा ।
शुणिऐ भलै री गला फिमाड़ा उठिऐ ग्रागला कौम नुग्राड़ा ।। १

उदमी लोका ता पंहिलें जागै छेता ताल्लौलै रें कौमा न लागै ।
सोइग्रा रौहैदे ग्रासे नभागै लोका ता निकतै केबड़ी ग्रागैं । २

पौहिलै छोडणी गंदी रुग्राजा रांभड़ें मनणे जातर साजा ।
नशै न खोणे नी बोगत नाजा खटिऐ छपिए बणना राजा ।। ३

शोभला देश सा पौजणू माटा खटणु ग्रालै बणाव रियाटा ।
सेरीन नाजा ता ग्रोकती फाटा कौसीनी चीजौरा ग्रासा बै घाट ।।४

गूगल धूप ता कौड़ू पतीशा शौठ जलाड़ो ता कौकड़ी बिशा ।
शिगली मिगली भौरुई दिशा कोतदै उठणा केरिऐ रीशा ।। ५

दुख दलिदर धौरनी पौथा उदम केरिए जिंदगी सोथा ।
बेवसा ढूणदा जोड़िऐ हौथा ग्रापणी कलमे लिखणा मौथा ।। ६

रछ-बणाहड़ो-सप्ताह—४३

हौथ खडी रा हफ्ता लागै ड़ें जागै सीदे शे रे भागा ।
केरा चिकटें कांधे बरुएं बै सारे बणाहड़ी जागा ।। १

म्हीन कपड़ा बूणा थी शोभला म्हारा हिन्दुसताना ।
कौन्ही गूठी री मूंदड़ी निसरै मल मलेंरें थाना ।। २

हौथ कौतिऐ बूणा थी घौरान म्हारे कूलू रै कोलै ।
मूठी ग्रोपड़ें चाधरु बूणा थी नालू ग्रोषड़ें चोलै ।। ३

धन म्हारैग्रा कूलू रै मुलखा हौथ रछैं रें देशा ।
सिभ बुणदे पंडत ठाकर नई बाहंका पेशा ।। ४

घौरा घौरा न ऊना कपाह् थी, घौरा घौरा थी कौता ।
फौना बूणा थी पूंबै बणाहड़ी, छींनै फेरा थी शेता ॥ ५

अबौ नोरें लागे फौनदै बणदै कारखाने मशीना ।
फौरै पूंबै जलाहू नकारे ड़ै जीणा कीजिए ईना ॥ ६

शौउ सौंकड़े माण्हू रा कौमता एकी माण्हूए थौम्हू ।
मारु रिजक जीना गरीबै रा तीनरा कौकडु कौम्हू ॥ ७

एसा गला फिमाड़दै जाणदै कांगरेसै रै नेता ।
हौथ कौतुआ खदर लाऽसी छापू रौंगुआ शेता ॥ ८

एई हफ़्तैं रा मनशा अंढा सा हौथ बुणुआ लाणा ।
जीण देणा बणाहड़ी पूंबै नै तहाँ तबै बशाणा ॥ ९

कंढे शोभलैं बुणदै लागीरै, रंगदार बणाई ।
जीण सोयुआ बुणनू आलैं रा, जबै लागी कमाई ॥ १०

दूर कीजी बै घौरा न हेरात, होछ होछणे शो:रू ।
लागै बुणदै शोभली शाला ते, जूणा चारा थी गोरू ॥ ११

शोऊ सौंकड़ें लागी रै रिजका, जुणा गरीब लोका ।
बेल्है फीरा थी ढबुऐ खेल्हींदै, नी ता मारा थी पोका ॥ १२

म्हारै देशै रा कौतुआ बुणुआ, मनु सारै संसारै ।
हौथ खडी री दौलत अबैं बी, चौलू समुदरा पारै ॥ १३

जीना लोकै रा रिजक निभु थी, तीना बेवशै री तौयें ।
हौथु कपड़ा केरू रिआइत, सरकारै गसौयें ॥ १४

मशीनी खाद—४४

शूणा कूलू र संघीओ जीमीन भौरा खाद मशीनी।
थौंढी फेरा सा पौजणू जीमी बौ जंढा चोपड़ चीनी । १

भूखी रौही जबौ माण्हू री काया ता बाहैं एजा सी दौंना।
भूखी जिमी बौ भौकरी फीरा सा पौजा किछ नीं होंदा ॥ २

प्हाड़ी जीमी सा रूसा मरीकैं बी पौजा पदरा शूणा।
धीनी जीमी बे पूरी खराक ता केरु खेऊ बी दूणा ॥ ३

जुग लागा अबौ सांइसी आलै रा सभ गला सखाली।
जूनी गोभुई आचली समं री मूंडा साम्हने भाली ॥ ४

डाकधरें ईने सांइसी आलॅ ऐ सारी चीजा फियाड़ी।
जूणा चीजा जौखें धाउड़ी फीरी तेहै तौखी पियारी । ५

घीउ घट्ठ ता डालडा बणू काया फीरी बी थौंधी।
मोल घट्ठ ता खाद बणाइऐ बाभी गोरुऐ सींधी ॥ ६

धौणी बौसुआ भौरुई देशान जीमी तेतरी रौही।
पेट पौजणू बांढी जमीना ऐ गल सोठणी पौई ॥ ७

भौरा मौल ता धाह दरुबड़ा गढ़ पाय चकेरा।
माटै खौटिऐ भरकू जबौ नेयै छेतान पेरा ॥ ८

थोड़ी घणी जौ कसर रौही ता पाणी खाद मशीनी।
मसौ करौ ईने साँइस दाने पैदा केरिऐ धीनी ॥ ९

नौबीं चीजा बै घौड़ा सी चांडा आसौ कूलू रें लोका।
सभी कौमा बौ भूका सो पीछैं न जबौ फोरे पराणे॥ १०

भूरी दाह मूं बै आपणे देशं री गोउ माण्हू बे वश।
लोका गोए आसौ जफड़ मीरै तबौ लागी कदशा ॥ ११

बौणेरी फराध—४५

म्हारँ देशै रे भाइओ कथा बोणो री शूणा ।
कथा शुणिऐ नीहचं सैंघै मना भितरे गुणा ॥ १
बौणा लाऐ परमेसरें आसरे जड़ी नाजो री सेरी ।
बौणा बूटीऐ आसरे देशे री बडी रछ्या केरी ॥ २
ईना बौणे री दौलत आसरे पौऐ बाजे रें कोठे ।
जबै ईना बै काटिऐ शोटाम रोणा लेबड़े ओठे ॥ ३
गाश पाणी कुल बोणे री दौलत सैंघे ढौका सी माटा ।
माटा रुढ़िऐ नाला बै जाला ता जीमी होणी छणाटा ॥ ४
बडी माल सी आसरें देशै री फौला बौणं रें बूटं ।
एई धनै री दौलत आसा बै मीलो सुखो रे भूटे ॥ ५
काठ कूणिए घोर नी चीणना काठ ढालो रा लाणा ।
बोहू लकड़ी लाणी सा जंढा जो मास आपणा खाणा ॥ ६
दादे बाबै जुणा बूटी टकाई तेकौमा आसरे आई ।
आसो आपणे जाए री तौइए होर लोड़ी बधाई ॥ ७
गल एतरी बोहू की ढूणनू गोऊ माण्हू बे वशा ।
होखी मीटीऐ काटाम बौणाता होणी म्हारी कदशा ॥ ८

खबदार—४६

निभदे लागे बोणा लोको फिटदे लागे बोणा ।
आपू ता जिऐ थी रांभड़ ता आगलै खाचान पौणा ।
नांगे केरलो देशा बै तबै सा खड़ी बांही एं रोणा ।
बोण पौडदं पातल लागा देश फिरदा घोणा ।
भांडे घोरे रें बेचिऐ जंढे लाऊ ढउआ कमोणा ।
बौणा निभिऐ मुलख यारो पौणा छाणकै छौणा ।
बुटं रोहात पंदरा तबै एक शोहरू जौणा ।
नई देश बेवश जुआड़ना लोहू पाणी न घोणा ।

नशा—४७

शुणा माण्हुओ सारे संसार रे, मता केरदे नशा ।
नशा केरिआ जानी री माले री, खोणी घौर री दशा ॥ १
मिलू जनम माण्हू रा आसा बो, सीभी जीवा न खरा ।
जीभ डुणदी अकल सोठदी, हौथ कौमा बो हेरा ॥ २
सारें जीऊ सी माण्हू रे वशा न, एसा बुद्धि रै जोरे ।
एसा लाये सा माण्हू री तागत, भालू ब्राघ बी डोर ॥ ३
एसा बुधिऐ भालात माण्हुएं छूंघै सरग तारें ।
कंढी-कंढी बणी कला मशीना ता बडैं जीउ बी हारें ॥ ४
नशा मारा सा माण्हू री अकल, बुध फेरा सा पीछे ।
बुधी मारीऐ माण्हू नी रौहँदा, नईं पयाड़दा किछ ॥ ५
भलौ बुरैं रा नफ ता घाटे रा थोघ लोजे रा छूटा ।
नशी आलो रा मान न धरम, नाता देवा रा चूटा ॥ ६
गोरु भेड़ा ता बोणे रें जीवा न थाल्है पूजा सा माण्हू ।
तबौ रोहू सौ कीजीरा माण्हू जौ भला बुरा नी जाणू ॥ ७
नशा केरीऐ बणा सी पागल जीसो कोसौ सी पोड़ा ।
गाल दोपड़ी डोसी पटाकी बौ होरा लोका सी घोड़ा ॥ ८
भलौ माणसा घौरे रे टबरा सरकार दबौंगा ।
नशी आलो रा इज्जत मान नी, सभी जगा पतारा ॥ ९
एकी घेरे बबो माण्हू री खाखी न लागा कोई बी नशा ।
सूर, चाकटी, भौंग, शराब सी केरा माण्हू बेवशा ॥ १०

परूआरै रा स्हाब—४८

जेतरी चीजा पिबारी संबारा न सीभी न बध लुआद पियारी ।
गाभरू, बेटी कलेजे रे टुकड़ैं दाह सा तीनरी पुठी नुआरी ।
दुख कलेश सा बिसरा माण्हुएं भालीऐ तीनरी हौसदी नुहारी ।
कीजीनै टबर दौलत कोठी सी बाझो लुआदिऐ सभ नकारी ।

संसार सा लुम्रादिऐ लुम्राद पै संसार सा ।
हुई बित्ता बाहंती ता बिगड़ा सुम्राद सा ।

जे नाम बीजा सी पियारी एसा दुनिया न ।
ल्वाद तीना सीभी मौंभै बघकी पियारी सा ।
होम्रा बेटी गाभरू सी कालजै रै टुकरै सा ।
भूरी दाह होम्रा बाल बचैरी निबारी सा ।
दुख ता कलेश काया मनै रै बसारिया सी ।
हौसदै जो भालो खिला मन री कियारी सा ।
कीजीबो ते टबर जमीना धन मान सी ।
लुम्रादी बाभी दुनिया ऐ बिघकी निहारी सा ।
लुम्राद मनीं दुनिया री पहली मुराद सा ।
हुई बित्ता बाहंती ता बिगड़ा सुम्राद सा ॥ १

एकी जौड़ी दूहरू रा नौंउचा वियाह केरू ।
खाणे लाणे हौसणे रै मजे रै बियाड़ै थी ।
एकी होरी घटी नई रौहिंदा थी एक घड़ी,
अंढै मन मौउजी न सुखी लाड़ी लाड़ै थी ।
खरा लाणा खाणा ब्याह जातरा न एणा जाणा,
नौचणा ता गाणा मन मजे रै लियाड़ै थी ।
लागा तां एजदा पराहुणा वधाई आला,
हुई किछ खुशी किछ नाक मौथै भाड़ै थी ।
अढी ऐ वधाई साई देऊरा प्रसाद सा,
हुई बीत्ता बाहती ता बिगड़ा सुम्राद सा ॥ २

तबो लागै जौमदै लंगीर लायै सदा साल,
होर ऐणा पेटा न जां एक हाजी फाढ़ै थी ।
पौंजा छौहा बौग्शा न जौमे चार बेटै बेटी,
चारै मेढ़ै अंढै सारै नखरै बगाड़ै थी ।

चढ़दी जुआनी लोभा चाऊरें धियाड़े मोंझें।
चेथुऐ ते चारें सिभ पिसरें फियाड़े थी ।

बालक बरेसा न सी लोभी जोड़ी बुढलुई।
मुहार घाट आपणे ता बचे रें बी माड़े थी।
अंढे ता सा होआ बचा बड़ी जायदाद सा।
जौमें बीता बाहँतै ता बिगड़ा सुआद सा ।। ३

रौही साल घौणी होंदी पीउंली नषीज कम
बोर साल ढौला पौड़ा गल मशहूर सा ।
फौल लागै घौणे जबो होणे होछ होछणु ता ।
भारा सँधै डाल चूटी जाणे दसतूर सा ।
तंढै घौणे बचो होंदै दुबलै नकारै रोगी ।
चोड़ा आमा बापू बै लुआद भर पूर सा
सोहै साल फोलं ता लुआद होणी बड़ी बाकी।
जुण डाही स्हाबै तेसा बाचीणा जरुर सा ।
ढालें री लुआदै सारा टबर अबाद सा ।
हुई बीता बाहँतौ ता बिगड़ा सुआद सा ।। ४
कोई माण्हू बोहू जीमी जगा ता बगीचें आला।
खांदा पींदा जड़कदा बड़ा जिमीदार थी ।
गोरु भेड़ा हाली ग्वाली टबर कमौणू आलें ।
ढवा धेला नाज पोथा खरा घौर बार थी ।
दूई भाई बेटड़ी ता नौऊ जौमें बेटे बेटी ।
न्हूशा पोचू पोची आला भौरी परुआर थी।
हुई दस बांडा तबै फूटा भौरी भांडा सौत ।
बीघे आला रौहू एक एक हेसे दार थी ।
बचौ लायौ बरकत फोका बकबाद सा ।
हुऐ बीता बाहँतें ता बिगड़ा सुआद सा । ५

घौरु लड़ाई—४६

देशै रें लोको खबदार फौजा आई होआ तियार
फौजी भोएऐ जंद शलोहे सीभी रे घौरा न तुरीऐ रोहे
बेटड़ी मरघ कठ पियार देशै रें लोको खबरदा फौजा-० ॥ १

शाधें नी तोबे नी आपूहे तूरें खोखन गोभुऐ सूने रें छूरें।
होसदे खेल्हीदे केरदे मार देशै रे लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ २

घौरा न एक ता नाजे रा तोड़ा तीनेरें भेलो पजेरीणा थोड़ा।
कीजिऐ बाचणे भोंख शुआर देशै रें लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥३

होरा बलागणे बेशीऐ खाणा सोभला कपड़ाती ना नन्याणा।
खोखे न पीठीन घूघू शुआर देशै रें लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ ४

घाचदे पालदे आद दियाई कौम बलागिऐ जूनी दियाई।
टबरा सारें री खोई नुहार देशै रे लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ ५

दंदे नी बेशणे रातीनी सोणे भीतरें बाहरें चौकिऐ ढोणे।
करड़ी ईनरी पाला बगार देशै रें लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ ६

जीमी रा नाज ता काया रा मास खाइऐ केरा सी सतियानास।
बोगते एतै रा केरा बचार देशै र लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार। ७

फौजी कूणा सी केरात आद बीता न बाहती जुण लुआद।
बोगते एतै रा केरा बचार देशै रें लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ ८

पाका ता चीनै री गल सा थोड़ी घौरे री फौजा ठाकुई लोड़ी।
मार करारी ता तोफ तलार देशै रे लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ ६

एता न बचणा लाज करायै अस्पताला न प्रेशन करायै।
बचौ रा आपणा देशै रा उधार देशै रें लोको खबरदार फौजा आई होआ तियार ॥ १०

खापरी शोहरी—५०

आलीकाया मेरी दूधें रे दौंदड़ जानू मानूएं घेरी।
मना भौरिऐ बहोसुआ नखेलुआ कंढी विपती पेरी।
काला तैयें थी खेलीदी पटकदी घौरा बौणा ता सेरी।
भौर खेला न खोई आमा बापुऐ लोभें शाहूरे पजेरी॥
कंढी शोभली जोड़ी थी ड़ै आसरी लोभ शोभ नी केरी।
सूजी सूजीऐ ईसी हाऊ लोचुई कौमी जोड़ी थकेरी॥
लोभ चाऊ नी हुआ मरें बचुओ चेना नोलू पगेरी।
सोठा मंतर आसा बै बचाणेरा शुणा अरजा मेरी॥

बचणे री सलाह—५१

बची जाणा भाई भी बची जाणा बोबी जी।
राजी रोणाहा: केरी हा: केऽरी जाणा बची ०
बच जमोणे दूई तराई जीण बणाणा थोरा हो जीण बणाणा थोरा।
मजो सौंधे ज्याई लेणे ज्याई लौणे ज्याई जेम सौंबें ज्याई लेणे ॥ २
बोहू जोमे ता डाक्टर पुछणे लाज कराणा पूरा हो लाज कराणा पूरा।
छेकें जाई लौणा जाई लौणा जाई छेवो छेवो जाऽऽई लेणा ॥ ३
जगान कैम्प जे लागदे सीरा कटांदे हो नूपा लुआंदे हो।
आपू जाये लाई लेणा लाई लेणा लाई आपू जाये लाऽऽई लेणा ॥ ४
बधदे चोरे री ऐ बरकतिऐ ढालो लोड़ी दरशण तेरें भलिऐ। १
स्हाबे रे लोड़ी बेटी गाभरू जोमे कीरडू नी लोड़ी टबरेलै भलिए। २
धाची पड़ाइएं माण्हू बणाइणे दूई ताराई जै जमे रे भलिए। ३
हुऐ नकारे तबे फौउजा चिंधिऐ कारी रे ता दूई बीब तेरें भलिए। ४



Tharah Kardu

प्रकाशक :—
चन्द्र शेखर बेवश
ढालपुर, कुल्लू (हि० प्र०)

मुद्रक :- ठाकुर प्रिंटिंग प्रैस, ढालपुर, कुल्लू ।